Front Aster-1

Aster-2

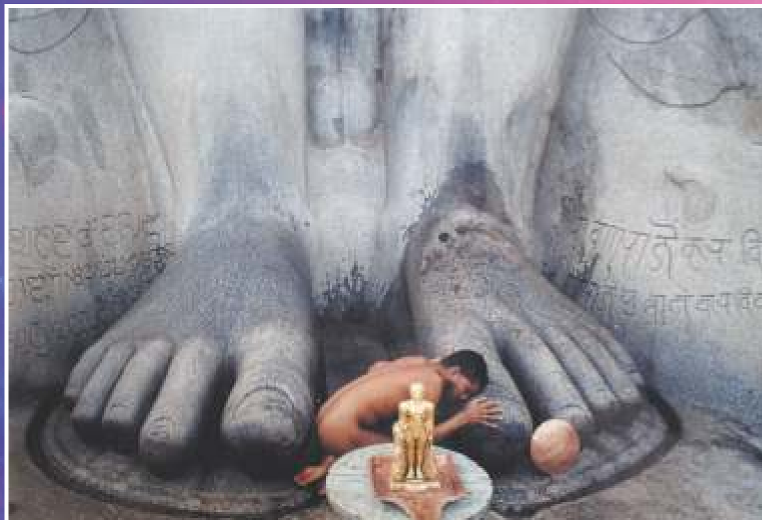

परम पूज्य
गणाचार्य
श्री 108
विरागसागर जी
महाराज

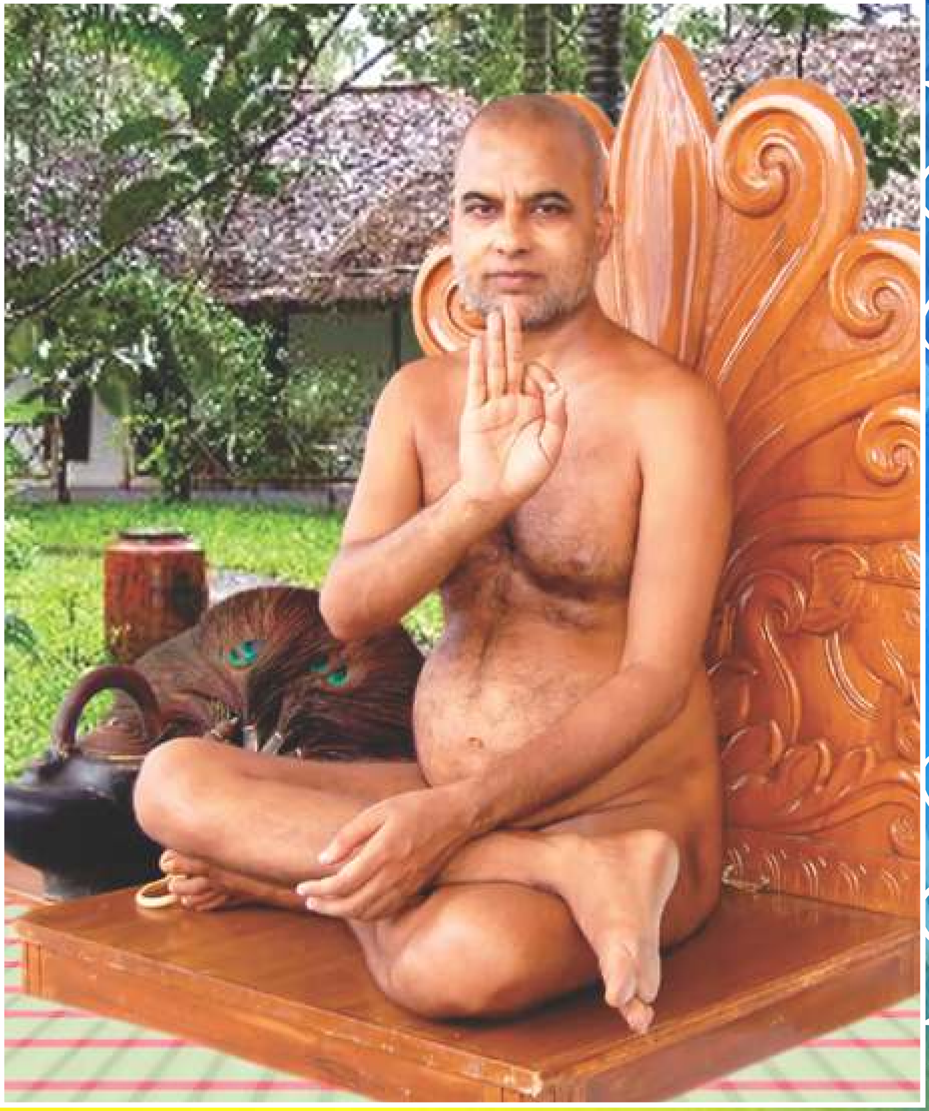

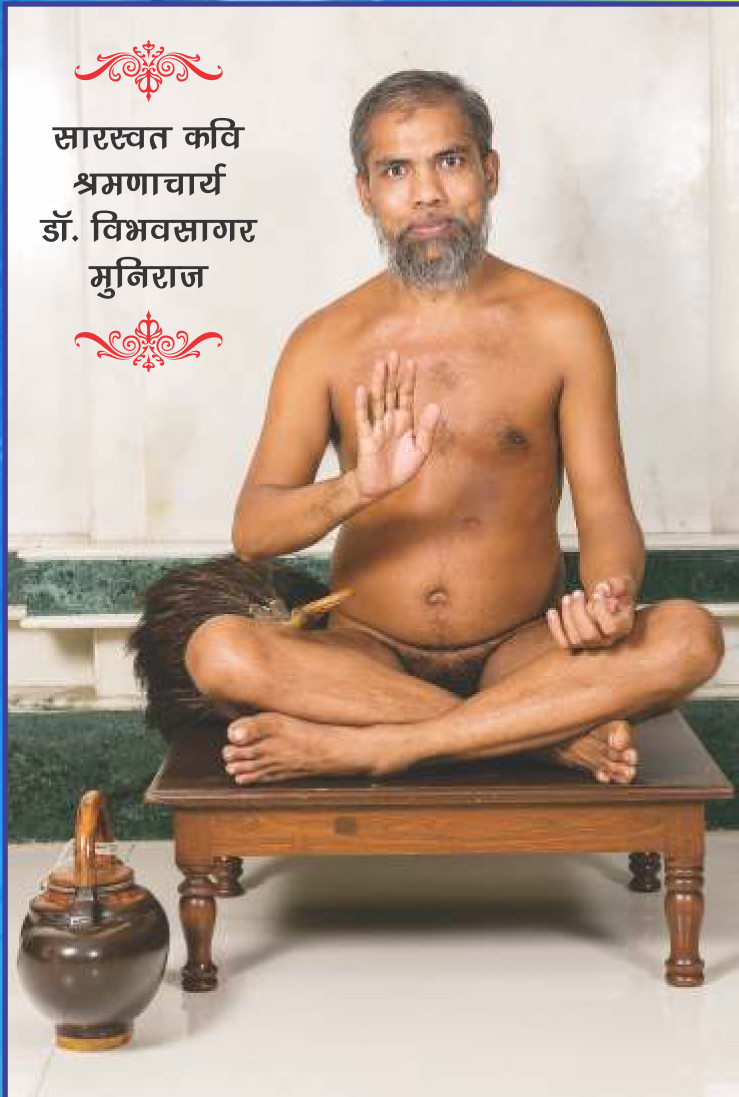

The Open International University for Complementary Medicines

CHARTER OF

MEDICINA ALTERNATIVA

(ALMA ATA 1962)

IN AFFILIATION WITH THE ZOROASTRIAN COLLEGE

Conducted under the auspices of the

ALL INDIA SHAH BEHRAM BAUG SOCIETY

(For Scientific & Educational Research)

AN NGO IN SPECIAL CONSULTATIVE STATUS WITH THE UNITED NATIONS ECONOMIC AND SOCIAL COUNCIL

The Senate and the Board of Governors hereby confer on

Acharya Vibhav Sagarji Maharaj Saheb

who has fulfilled the qualifying requirements, the degree of

Doctor of Philosophy (HONORIS CAUSA)

with all the rights, honours and privileges pertaining to this degree.
In testimony whereof, we have subscribed our names and caused the seals of the University to be herein affixed

Given at Colombo on the 8th day of June 2019.

For O.I.U.C.M. Senate

President, Zoroastrian College

For Vice Chancellor, O.I.U.C.M.

Vice President/Centre Head

Registered No. 2019/J-015

Holder's Signature

The abovenamed is hereby authorized to use the suffix Ph.D after his/her name.

सचित्र सार्थ

गौतम गणधर विरचित

ऋद्धि मंत्र

अनुवादक

श्रमणाचार्य विभवसागर

प्रस्तुति

आर्यिका ओम्श्री माताजी

अणुक्रमणिका

1	णमो जिणाणं	21	13	णमो उजु-मदीणं	45
2	णमो ओहि-जिणाणं	23	14	णमो विउल-मदीणं	47
3	णमो परमोहि-जिणाणं	25	15	णमो दस पुव्वीणं	49
4	णमो सव्वोहि-जिणाणं	27	16	णमो चउदस-पुव्वीणं	51
5	णमो अणंतोहि-जिणाणं	29	17	णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं	53
6	णमो कोट्ठ-बुद्धीणं	31	18	णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं	55
7	णमो बीज-बुद्धीणं	33	19	णमो विज्जाहराणं	57
8	णमो पदाणु-सारीणं	35	20	णमो चारणाणं	59
9	णमो संभिण्ण-सोदारणं	37	21	णमो पण्ण-समणाणं	61
10	णमो सयं-बुद्धाणं	39	22	णमो आगासगामीणं	63
11	णमो पत्तेय-बुद्धाणं	41	23	णमो आसी-विसाणं	65
12	णमो बोहिय-बुद्धाणं	43	24	णमो दिट्ठिविसाणं	67

अणुक्रमणिका

25	णमो उग्ग–तवाणं	69
26	णमो दित्त–तवाणं	71
27	णमो तत्त–तवाणं	73
28	णमो महा–तवाणं	75
29	णमो घोर–तवाणं	77
30	णमो घोर–गुणाणं	79
31	णमो घोर–परक्कमाणं	81
32	णमो घोर–गुण–बंभयारीणं	83
33	णमो आमोसहि–पत्ताणं	85
34	णमो खेल्लोसहि–पत्ताणं	87
35	णमो जल्लोसहि–पत्ताणं	89
36	णमो विप्पोसहि–पत्ताणं	91
37	णमो सव्वोसहि–पत्ताणं	93
38	णमो मण–बलीणं	95
39	णमो वचि–बलीणं	97
40	णमो काय–बलीणं	99
41	णमो खीर–सवीणं	101
42	णमो सप्पि–सवीणं	103
43	णमो महुर–सवीणं	105
44	णमो अमिय–सवीणं	107
45	णमो अक्खीण महाणसाणं	109
46	णमो वड्ढमाणाणं	111
47	णमो सिद्धायदणाणं	113
48	णमो भयवदो–महदि–महावीर–वड्ढमाण–बुद्ध–रिसीणो, चेदि।	115

ऋद्धि मंत्र

अनुवादक

महाकवि डॉ. आचार्य विभवसागर

कृति	:	ऋद्धि मंत्र
कृतिकार	:	गौतम गणधर
शुभाशीष	:	गणाचार्य विरागसागर जी
अनुवादक	:	महाकवि डॉ. श्रमणाचार्य विभवसागर जी
प्रस्तुति	:	मंत्रपुत्री आर्यिका ओम्श्री माताजी
शब्द संशोधक	:	श्रमण शुद्धात्मसागर
चित्रकार	:	अरविन्द आचार्य इन्दौर (म.प्र.)
संस्करण	:	प्रथम वर्ष 2021
पावन प्रसंग	:	पावन वर्षायोग 2021 मुंगाणा, (राज.)
मूल्य	:	स्वाध्याय
प्रकाशक	:	श्रमण श्रुत सेवा संस्थान, जयपुर शाखा : इन्दौर
प्राप्ति स्थल	:	सौरभ जैन, जयपुर, 9829178749 टी.के. वेद, इन्दौर, 9425154777 प्रतिपाल टोंग्या, इन्दौर, 9302106984 सन्मति जैन, सागर, 9425462997 सुभाष जैन, अशोक नगर, 9425760468
मुद्रक	:	प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर, 9829205270

ॐ

भेदाभेद रत्नत्रय के आराधक श्रमणों
को आत्म विशुद्धि परक अनाकांक्षित
आराधना अनेकों सिद्धि-निधि को
हेतु बन जाती हैं फिर भी वे अपने
आत्म वैभव के समक्ष निर्मूल्य ही
समझते हैं। और उनमें अन्यतम हैं
श्रमणाचार्य श्री विभव सागर जी ने
[illegible] "सिद्धि-मंत्र" पुस्तक
लिखी हैं। यह उनका इस विषय
में किया गया कार्य प्रशंसनीय है.
मेरा उन्हें उनके इस कार्य के लिये
शुभाशीष..।

ॐ नमः
1/11/2/2548

शुभाशीर्वाद

— आचार्य विभवसागर

ऋद्धि गुण सम्पन्न ऋद्धिधारी ऋषियों के स्मरण, नमन स्वरूप अड़तालीस ऋद्धि मंत्र श्रमण संस्कृति में सदा स्मरणीय है।

गौतम गणधर प्रणीत होने से इन्हें गणधर वलय स्तोत्र के साथ स्मरण किया जाता है। भक्तामर स्तोत्र आराधना मंत्रों में इन्हीं मंत्रों का बड़ी श्रद्धा से मंत्र विधि करना बताया है। श्रद्धा से भरा हुआ पवित्र मन इन मंत्रों की आराधना कर अनेक कार्य सिद्ध कर लेता है।

मैंने संकल्प पूर्वक इन ऋद्धि मंत्रों को दिन तीन में कण्ठस्थ किया था। तब से प्रतिदिन शान्तिधारा में इन मंत्रों का स्मरण, उच्चारण कर शान्ति धारा सम्पन्न कराता हूँ।

मेरे शिष्य समुदाय में भी ऋद्धि मंत्रों के प्रति गहरी आस्था है। यही कारण है, हमारी मंत्र पुत्री आर्यिका रत्न ओमश्री माता जी ने ऋद्धि मंत्रों को सचित्र प्रकाशन की भावना भायी। तदनुसार चित्रकार अरविन्द आचार्य, इन्दौर ने भाव, भक्ति भावना सम्पूरित तूलिका से चित्र रचना की।

धवला पुस्तक नौ से ऋध्दि मंत्र के अर्थ भाव को समझकर मैं भाषानुवाद कर गणधर वलय विधान रचा था।

संप्रति प्रस्तुत कृति में मूल मंत्र, अर्थ भावानुवाद एवं चित्र संयोजन कर आर्यिकारत्न ओम श्री माताजी द्वारा प्रस्तुति हो रही।

इस शास्त्र के प्रकाशन कर्ता दान चिंतामणि परिवार को एवं मुद्रणकर्ता विकासजी अग्रवाल प्रिन्ट ओ लेण्ड, जयपुर को मंगल शुभाशीर्वाद....।

दीपावली 2021, मुंगाणा

ऋद्धि मन्त्राणि

श्री गौतम गणधर प्रणीत ऋद्धि मन्त्राणि अहं प्रतिदिनं पठामि। अहं इच्छामि त्वमपि अहर्निशं ऋद्धि मंत्रं पठ। मयि संघे सर्व-साधव: सदाकालं मन्त्र पाठं कुर्वन्ति। मम गुरूणां गुरु: श्री विराग-सागर आचार्यवर्य: ऋद्धि मन्त्राणां ध्यानं धरति। जापं जपति। पंचविंशति सहस्रोपरि मन्त्रमपि स्मरति। एतेषु मन्त्रेषु प्रत्येक मन्त्रस्य लक्षाधिकं जापान्यकरोत्।

मन्त्रस्य का महिमा। किं माहात्म्यं। किं फलं च सैव जानाति अनुभवति वा। स विहार काले सदा सर्वत्र पाप विनाशार्थं पुण्यलाभार्थं जाप्यानि जपति। मन्त्र चिन्तया चिन्तामपि न भवति। एतद् कारणेन अस्मिन् संघे अपि श्री विभव सागर गुरु: शान्ति धारायां ऋद्धि मन्त्राणि पाठं उच्चारयति। तस्योच्चारणं श्रुत्वा याचका:/अर्चका: धन्या: भवन्ति।

मन्त्र पाठ फलेन शांति:, कीर्ति:, बुद्धि:, विशुद्धि: सुबुद्धि: च भवन्ति। अहं प्रार्थयामि भावयामि विश्वस्मिन् सदा सर्वत्र शान्ति: भवतु। ॥जयदु सुद देवदा॥ नँ श्रीमाताजी

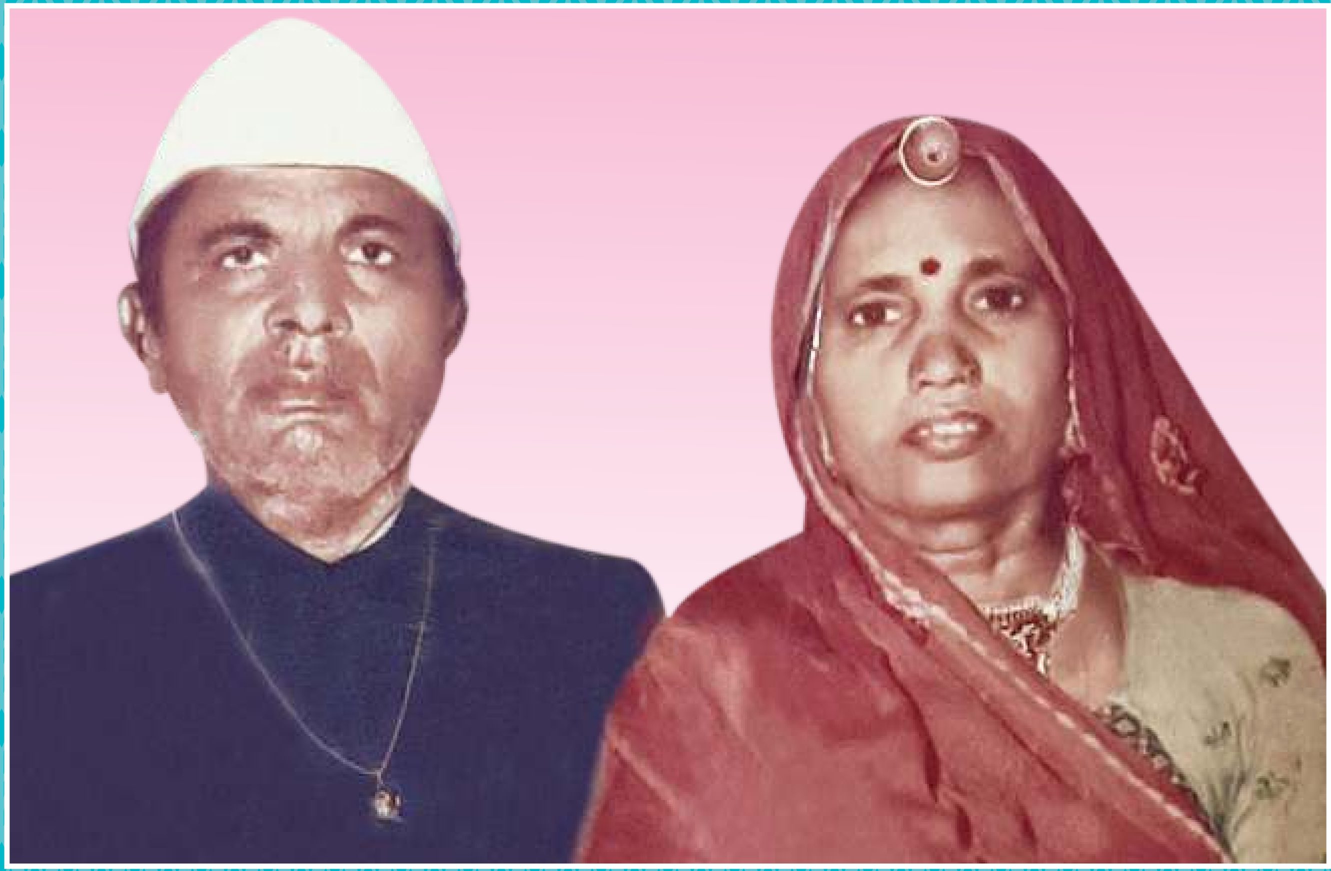

श्री नाथूलाल जी दोसी, श्रीमती रूपाली बाई दोसी
श्री विनोद जी दोसी, श्रीमती अंजना दोसी, बागीदौरा, राजस्थान

तोरावत रोजश्वरी धर्म पत्नी रमेशचन्द्र जी छगनलाल जी रामगढ़
पुत्री पायल जैन, पुत्र चाहत जैन

गणधर-वलय

जिनान् जिताराति-गणान् गरिष्ठान्,
देशावधीन् सर्व-परावधींश्च।

सत्-कोष्ठ बीजादि-पदानुसारीन्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै।। 1।।

संभिन्न-श्रोतान्वित-सन्-मुनीन्द्रान्,
प्रत्येक-सम्बोधित-बुद्ध-धर्मान्।

स्वयं-प्रबुद्धांश्च विमुक्ति-मार्गान्,
स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै।। 2।।

द्विधा मनः पर्यय-चित्-प्रयुक्तान्,
द्विपञ्च-सप्तद्वय-पूर्व-सक्तान्।

अष्टांग-नैमित्तिक शास्त्र-दक्षान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।। 3।।

विकुर्वणाख्यर्द्धि - महा - प्रभावान्,
विद्याधरांश्चारण-ऋद्धि-प्राप्तान्।

प्रज्ञाश्रितान् नित्य-ख - गामिनश्च,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।। 4।।

आशी र्विषान् दृष्टि-विषान् मुनीन्द्रा-,
नुग्राति-दीप्तोत्तम -तप्त तप्तान्।

महातिघोर - प्रतपःप्रसक्तान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।। 5।।

वन्द्यान् सुरै - र्घोर - गुणांश्च लोके,
पूज्यान् बुधै-र्घोर-पराक्रमांश्च।

घोरादि-संसद-गुण ब्रह्म युक्तान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।। 6।।

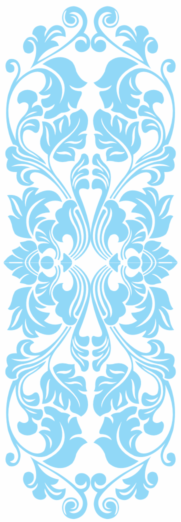

गणधर-वलय

आमर्द्धि-खेलर्द्धि-प्रजल्ल-विडर्द्धि-
सर्वर्द्धि-प्राप्तांश्च व्यथादि-हंतृन्।

मनो-वचः काय-बलोपयुक्तान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।7।।

सत् क्षीर-सर्पि-र्मधुरामृतर्द्धीन्,
यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।

प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्-प्रपूज्यान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।8।।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्,
श्रीवर्धमानर्द्धि विबुद्धि-दक्षान्।

सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा - नृषीन्द्रान्,
स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै।।9।।

नृ-सुर-खचर-सेव्या विश्व-श्रेष्ठर्द्धि-भूषा,
विविध-गुण-समुद्रा मार मातंग-सिंहाः।

भव-जल-निधि-पोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनि-गण-सकलाः श्री-सिद्धिदाः सदृषीन्द्राः।।10।।

नित्यं यो गणभृन्मन्त्र, विशुद्धसन् जपत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुण्यानां, निर्जरा पापकर्मणाम्।।

नश्यादुपद्रवकश्चिद्, व्याधिभूत विषादिभिः।
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो।। 11।।

ऋद्धि मंत्र

1 णमो जिणाणं
2 णमो ओहि–जिणाणं
3 णमो परमोहि–जिणाणं
4 णमो सव्वोहि–जिणाणं
5 णमो अणंतोहि–जिणाणं
6 णमो कोट्ठ–बुद्धीणं
7 णमो बीज–बुद्धीणं
8 णमो पदाणु–सारीणं
9 णमो संभिण्ण–सोदारणं
10 णमो सयं–बुद्धाणं
11 णमो पत्तेय–बुद्धाणं
12 णमो बोहिय–बुद्धाणं
13 णमो उजु–मदीणं
14 णमो विउल–मदीणं
15 णमो दस पुव्वीणं
16 णमो चउदस–पुव्वीणं
17 णमो अट्ठंग–महा–णिमित्त–कुसलाणं
18 णमो विउव्वइड्ढि–पत्ताणं
19 णमो विज्जाहराणं
20 णमो चारणाणं
21 णमो पण्ण–समणाणं
22 णमो आगासगामीणं
23 णमो आसी–विसाणं
24 णमो दिट्ठिविसाणं
25 णमो उग्ग–तवाणं
26 णमो दित्त–तवाणं
27 णमो तत्त–तवाणं
28 णमो महा–तवाणं
29 णमो घोर–तवाणं
30 णमो घोर–गुणाणं
31 णमो घोर–परक्कमाणं
32 णमो घोर–गुण–बंभयारीणं
33 णमो आमोसहि–पत्ताणं
34 णमो खेल्लोसहि–पत्ताणं
35 णमो जल्लोसहि–पत्ताणं
36 णमो विप्पोसहि–पत्ताणं
37 णमो सव्वोसहि–पत्ताणं
38 णमो मण–बलीणं
39 णमो वचि–बलीणं
40 णमो काय–बलीणं
41 णमो खीर–सवीणं
42 णमो सप्पि–सवीणं
43 णमो महुर–सवीणं
44 णमो अमिय–सवीणं
45 णमो अक्खीण महाणसाणं
46 णमो वड्ढमाणाणं
47 णमो सिद्धायदणाणं
48 णमो भयवदो–महदि–महावीर–
वड्ढमाण–बुद्ध–रिसीणो, चेदि।

गणधर स्तोत्रम्

– आचार्य विभव सागर रचित

भो! गणनायक! गणधर नाथं,
सर्व कलासु परम प्रवीणं।
आदि जिनेशस्य वृषभ सेनं,
तं नित वन्दे, गणधर देवं।।1।।

केशर सेनं अजित सभायां,
चारु सुदत्तं मुनिवर ईशं।
साधु नुतं वज्र चमर साधुं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।2।।

श्री मुनि! हे वज्र चमर नामं,
हे बलदत्त प्रणष्ट विकल्पं।
धीपति वैदर्भ गणराजेशं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।3।।

नाग! गणेशं बुध गुण ईशं,
कुन्थु जिनं धर्म अमृत पूतं।
मन्दिर साधुं जय जयकारं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।4।।

नाथ अरिष्टं गुण गुण धारं,
सेन सु चक्रायुध गुण सारं।
कुम्भ! विशाखं यतिपति मल्लिं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।5।।

सप्रभ साधुं श्रतु व्रत दक्षं,
पावन मूर्तिं मुनिवर दत्तं।
नाथ स्वयंभू विभव-पदेशं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।6।।

गौतम स्वामिन्! मुनिवर सेवं,
वीर सभायां जन मन मोदं।
त्यक्त ममत्वं, हृदय समत्वं,
तं नित वन्दे गणधर देवं।।7।।

।। मंगलाचरण ।।

हे शास्त्रराज! तुम ही, श्रुत देवता हो।
मैं आज सिद्ध करता, श्रुत देवता को।।
माथा पवित्र करने, ऋषि मंत्र ध्याऊँ।
ये ऋद्धि मंत्र जपके, सब ऋद्धि पाऊँ।

-आचार्य विभवसागर

गौतम गणधर विरचित

ऋद्धि मंत्र

ऋद्धि मंत्र

णमो जिणाणं जिन नमन

अर्थः जिनेन्द्रों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

समयग्दर्शन ज्ञान चरण,
सर्वजिनों में तीन रतन।
सकल देश जिन दोनों जिन,
सर्वजिनों को नमन नमन।।

क्यों करता हूँ हे भगवन्!
निज मंगल के लिए नमन।
मंगल क्या है बतलाओं?
श्रुत रहस्य गुरु प्रकटाओं।।

भव-भव संचित पाप करम,
मंगल से हों शीघ्र शमन।
कार्य सिद्धि के लिए परम,
सर्व कार्य में सर्व प्रथम।।

णमो जिणाणं उच्चारण,
यही मंगलाचरण शरण।
इष्ट देवता का सुमरण,
करूँ मंगलाचरण श्रवण।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 1 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो ओहि जिणाणं

अर्थः अवधिजिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

रत्नत्रय के प्राण श्रमण,
अवधि जिनों को नमन-नमन।
अवधि ज्ञान का वाचक है,
साहचर्य का ज्ञापक है।।

अवधि ज्ञान के पूर्व सभी,
मति श्रुत दोनों अवधि-अवधि।
देशावधि गुण ग्रहण यहाँ,
जघन्य मध्यम परम यहाँ।।

गुण से गुणी जुदा कैसा?
गुणी सदानिज गुण जैसा।
गुणी गुणों में भेद नहीं,
किंचित् यहाँ विरोध नहीं।।

अवधि जिनेश्वर कौन कहे,
जो रत्नत्रय सहित रहे।
अवधिज्ञानी अवधि जिन हैं,
उन्हें हमारा वन्दन हैं।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 2 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो परमोहि जिणाणं

अर्थः परमावधि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

देशावधि से अधिक विषय,
परमावधि की जय जय जय।
परम विशुद्धि संयत हो,
उसको ही परमावधि हो।।

परम ज्येष्ठ कहलाता है,
सदा श्रेष्ठ कहलाता है।
सुनो ज्येष्ठता का कारण,
श्रद्धा से करलो धारण।।

परमावधि जो उपजाते,
नहीं असंयम में आते।
यह विशुद्ध अप्रतिपाती,
कभी नहीं संयमघाती।।

जिस भव में परमावधि हो,
उस भव में केवल बुध हो।
और सभी कल्याण करे,
उस भव ही निर्वाण करे।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 3 ।।

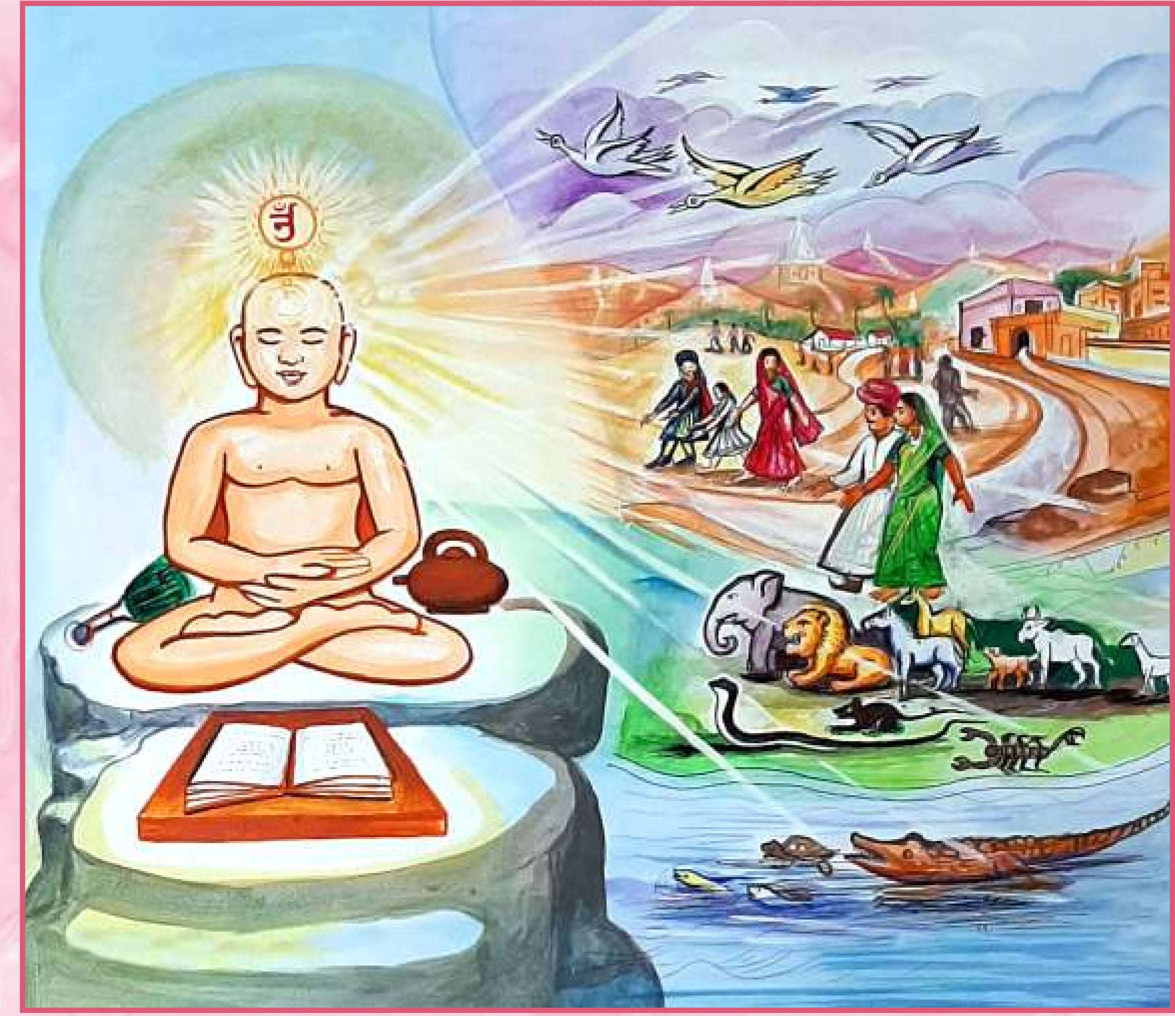

ऋद्धि मंत्र

णमो सव्वोहि जिणाणं

अर्थ : सर्वावधि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

विश्व कहो या सर्व कहो,
दोनों को एकार्थ कहो।
पर समस्त का वाचक ना,
या समग्र का वाचक ना।।

सबके एक देश जानों,
रूपी द्रव्य विषय मानो।
सर्व रूपगत मर्यादा,
सर्वावधि संज्ञा पाता ।।

पुद्गल द्रव्य सर्व जानो,
जाने सर्वावधि मानो।
जग में जितने पुद्गल हों,
असंख्यात जग भरकर हों।।

तो भी जाने जा सकते,
सर्वावधि को हम नमते।
सर्वावधि का हुआ कथन,
सर्वावधि जिन नमन नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 4 ।।

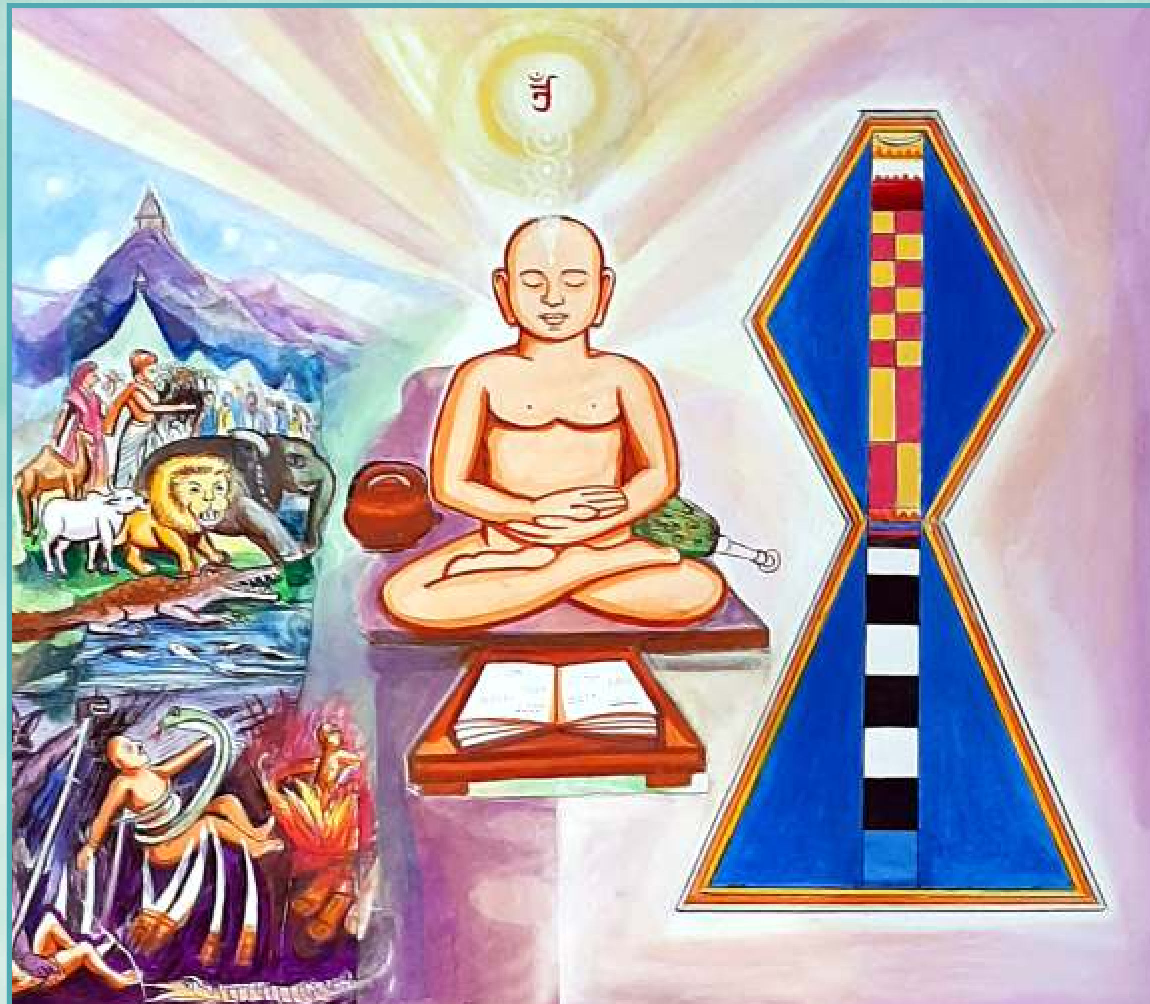

अर्हं मंत्र

णमो अणंतोहि जिणाणं

अर्थः अनन्तावधि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

अन्त नहीं औ अवधि नहीं,
जीव अनन्तावधि यहीं।
केवल ज्ञानी भगवन्ता,
अवधि अनन्ता जयवन्ता।।

हैं अनन्त के भेद अनन्त,
यहाँ ग्रहण उत्कृष्ट अनन्त।
जो उत्कृष्ट अवधि वाला,
वही अनन्तावधि वाला।

अहो अनन्तावधि वाले,
केवलज्ञान सुबुधि वाले।
सिद्ध अनंता अरिहंता,
काल अनंता जयवंता।।

यदि अनन्त तो अवधि कहाँ?
अवधि जहाँ हो अन्त वहाँ।
नामापेक्षा यह संज्ञा,
वस्तुनिमित्तक यह संज्ञा।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 5 ।।

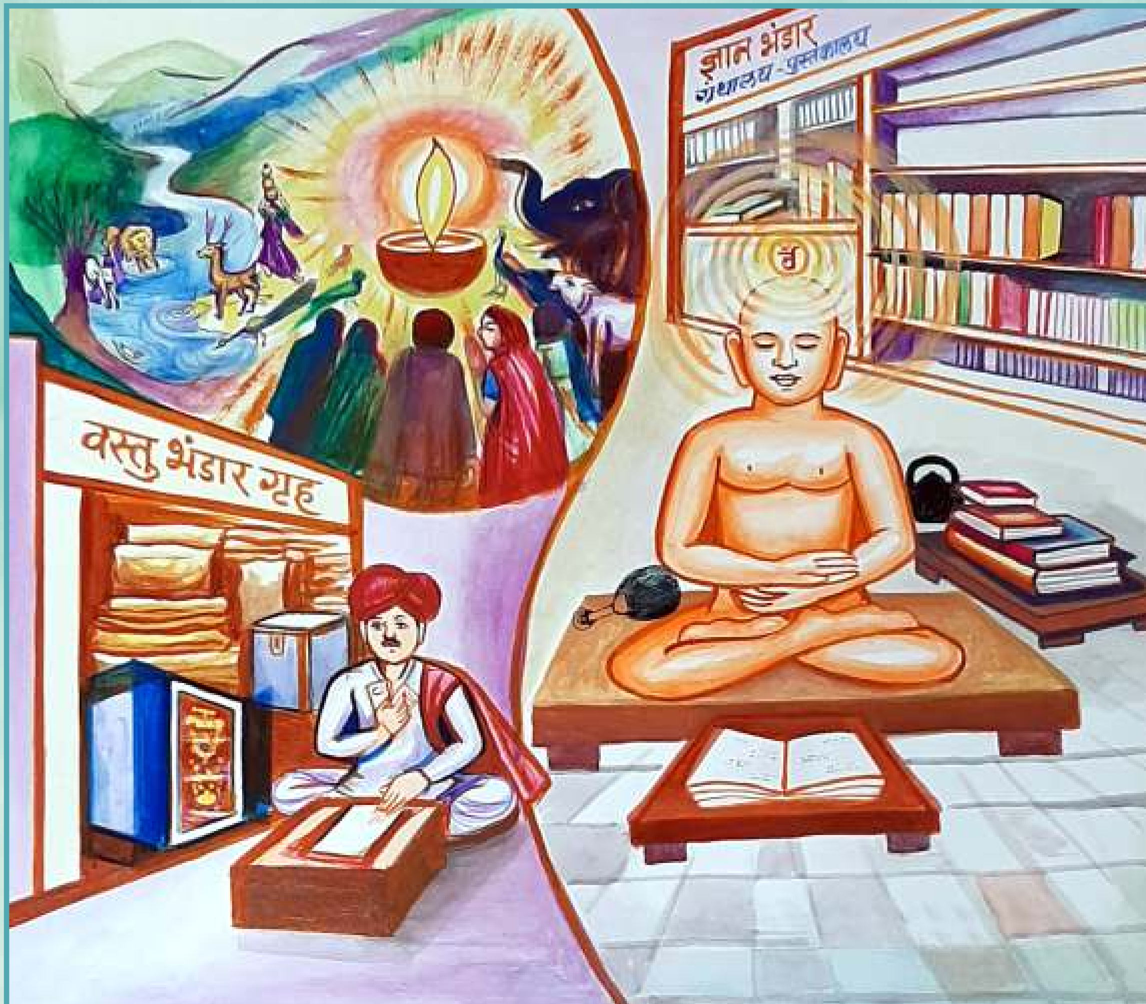
ज्ञान भंडार
ग्रंथालय - पुस्तकालय
वस्तु भंडार गृह

णमो कोट्ठ बुद्धीणं

अर्थः कोष्ठबुद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

नदी न्याय से यह जानो,
आगे सबको जिन मानो।
आदि दीप का न्याय यहाँ,
आगे जिन सर्वत्र यहाँ।।

गेहूँ, चावल, चना, उड़द,
ज्वार, बाजरा जवा रसद।
एक जगह मिलकर रखते,
तो भी भिन्न-भिन्न रहते।।

ज्यों कोठे में धान्य रखें,
त्यों आतम में ज्ञान रखें।
कोष्ठ रूप जो बुद्धि विमल,
समझो कोष्ठ बुद्धि निर्मल।।

श्रुत सम्बन्धी द्रव्यों को,
उनकी कुछ पार्यायों को।
निज श्रुत में धारण रखते,
कोष्ठबुद्धि ऋषि हम नमते।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 6 ।।

ऋद्धि मंत्र

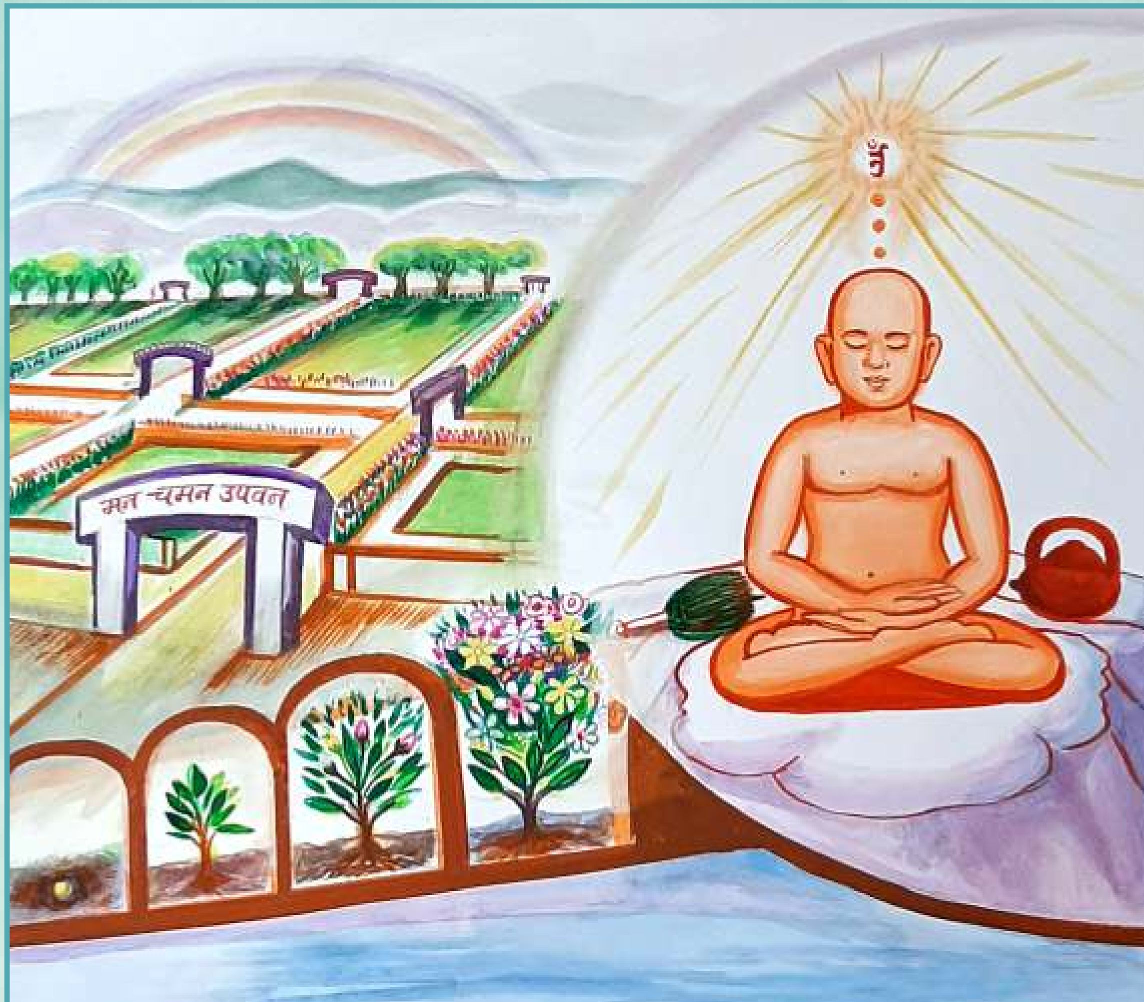

णमो बीज बुद्धीणं

अर्थः बीजबुद्धि धारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

बीज बुद्धि के धारक जिन!
भक्तिभाव से हो वन्दन।।
जिनका ज्ञान बीज सम है,
बीज बुद्धि ऋषि अनुक्रम है।।

बीज वपन हो अंकुर हो,
पत्र पुष्प, तुष, तंदुल हो।
एक बीज आधार रहा,
उसका सब व्यापार रहा।।

यह दृष्टान्त समझ आया,
बीज बुद्धि लक्षण गाया।
बीज पदों की बुद्धि जहाँ,
बीज बुद्धि हो ऋद्धि वहाँ।।

द्वादशांग की उत्पादक,
बीज बुद्धि मुनि सुखदायक।
प्रबल अवग्रह बोध उगा,
बीज बुद्धि का बीज उगा।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 7 ।।

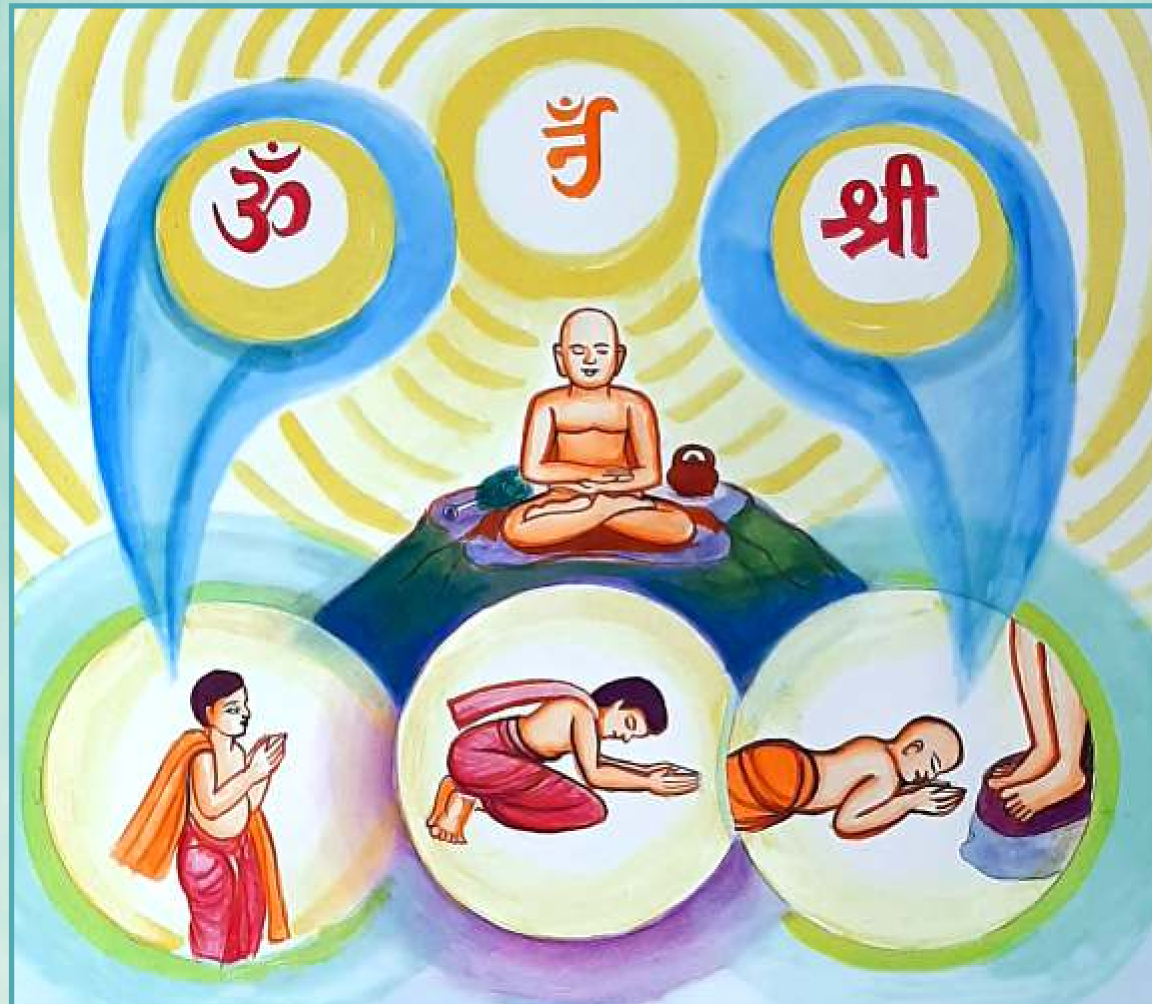

मंत्र शक्ति

णमो पदाणु सारीणं

अर्थः पदानुसारी ऋद्धि धारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

पदानुसारी जिनगण को,
नमस्कार मम क्षण-क्षण हो।
ना प्रमाणपद ग्रहण यहाँ,
ना मध्यम पद ग्रहण यहाँ।।

बीज पदों का ग्रहण यहाँ,
उसका ही अनुसरण यहाँ।
जो पद का अनुसरण करे,
पदानुसारी नाम धरे।।

अनुसारी, प्रतिसारी दो,
तीजी तदुभय सारी हो।
जो समग्र श्रुत जो जाने,
अक्षर पद सब पहिचाने।।

परम ऋद्धि के धारी जिन,
संयम साधक सत्यश्रमण।
नमता हूँ मैं नत होकर,
प्रतिपल भूमि पतित होकर।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 8 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो संभिण्ण सोदारणं

अर्थ: संभिन्न श्रोतृ ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

संभिन्न श्रोतृ ऋद्धि परम,
ऋद्धीश्वरजिन! नमन-नमन।
नौ हजार गजराज रहें,
इक गज आश्रित सौ रथ हैं।।

रथ आश्रित सौ घोड़े हैं,
घोड़ा आश्रित सौ नर हैं।
अक्षौहिणी इह विधि जाने,
इससे चार गुणा माने।।

एक साथ सब शब्द करें,
कोलाहल से दिशा भरें।
सबको भिन्न-भिन्न सुनलें,
कहना चाहे तो कहलें।।

इससे भी संख्यात गुणी,
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि।
यह ऋद्धीश्वर जान रहें,
ना कुछ विस्मय मान रहें।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। ९ ।।

श्रेष्ठि मंत्र

णमो सयं बुद्धाणं

अर्थ: स्वयंबुद्ध जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

स्वयं बुद्ध तीर्थंकर जिन!
ऋद्धि प्राप्त हे श्रमण नमन।
और भला ये कैसे हैं!
बतलाता हूँ ऐसे हैं।।

ये पर के उपदेश बिना,
धर्मशास्त्र या कोश बिना।
कभी गुरुकुल जाये बिना,
कोई गुरु बनाये बिना।।

पूर्व भवों के श्रुत बल से,
इस भव के निज तप बल से।
आत्मज्ञान प्रकटाते हैं,
स्वयं बुद्ध कहलाते हैं।।

निज के गुरु निज ही होते,
जग की जड़ता को खोते।
महापुण्य से मिले गुरु,
गुरु से जीवन करूँ शुरू।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 10 ।।

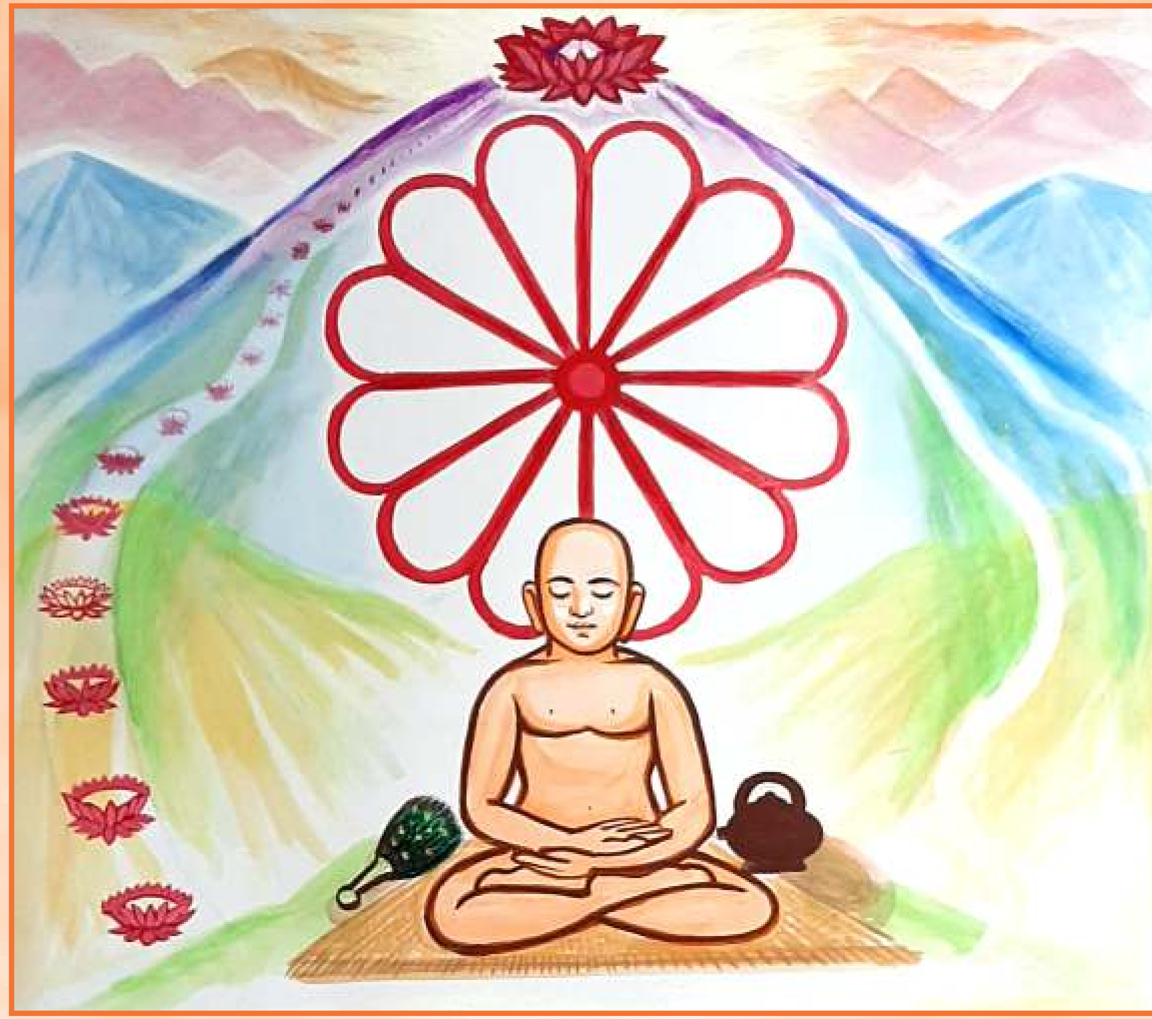

ऋद्धि मंत्र

णमो पत्तेय बुद्धाणं

अर्थः प्रत्येक बुद्ध जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

बारह भावन भा करके,
आत्मज्ञान को पा करके।
उर वैराग्य सजा करके,
मोक्षमार्ग अपनाकर के।।

निज पर के उपकारक जिन,
भव्यों के भवतारक जिन।
मुनिवर रत्नत्रय धारी,
परम दिगम्बर अविकारी।।

जो प्रतिबुद्ध कहाते हैं,
आत्म शुद्धि प्रकटाते हैं।
ज्ञान कला के धारी हैं,
सम्वर के अधिकारी हैं।

प्रत्येक बुद्ध ऋद्धि धारी,
परम शुद्ध संयम धारी।
बोधिलाभ दो नमन करूँ,
पद चिन्हों पर गमन करूँ।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 11 ।।

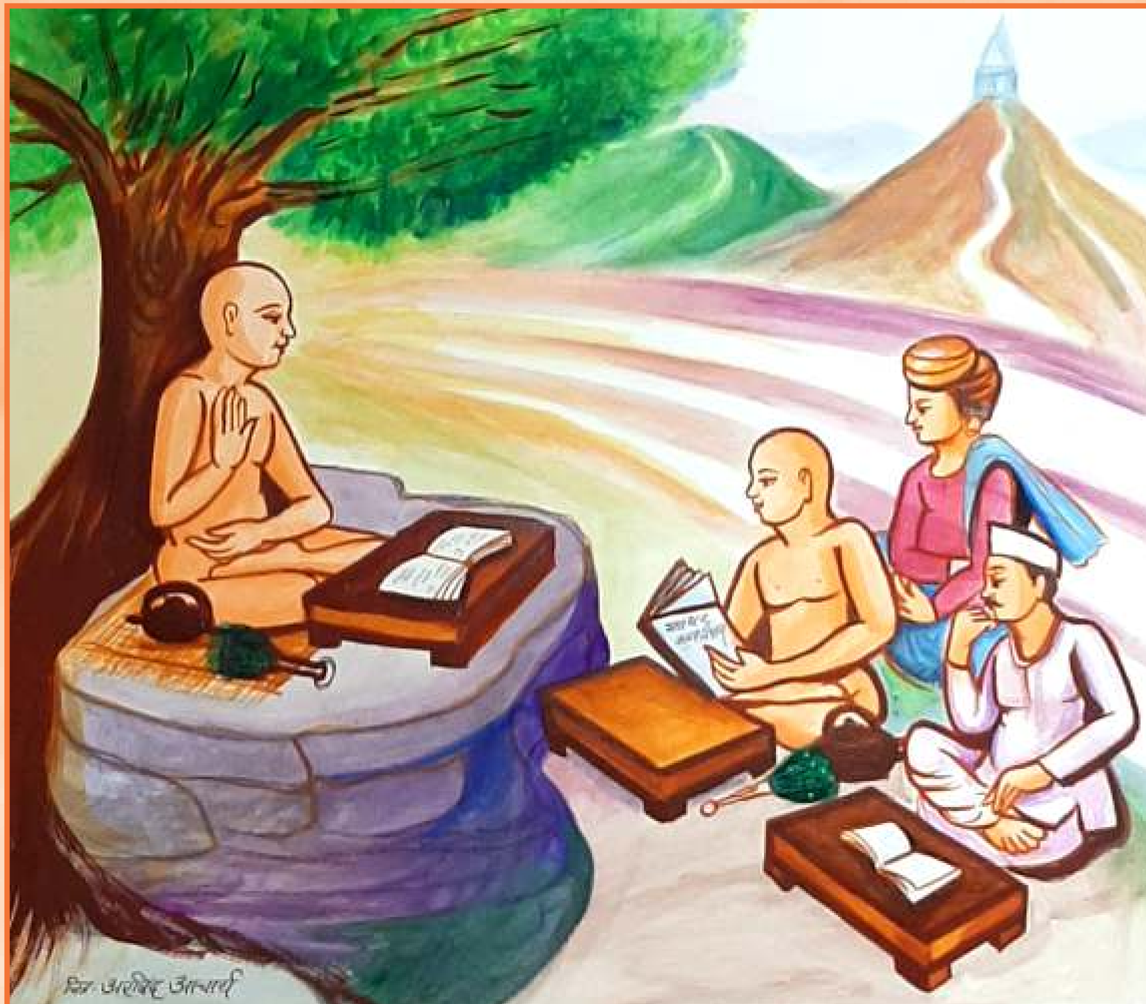

ऋद्धि मंत्र

णमो बोहिय बुद्धाणं

अर्थः बोधितबुद्ध जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

श्री गुरु से सम्बोधित हो,
श्रुत शास्त्रों से बोधित हो।
बार-बार उपदेशित हो,
बुद्ध आप हो बोधित हो।।

मूलगुणों के धारी हो,
उत्तर गुण अधिकारी हो।
साधु श्रमण अनगारी हो,
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी हो।।

बोधित बुद्ध कहाते हो,
बोधिमार्ग सिखलाते हो।
बुधजन चरण शरण आते,
आत्मबोध तुमसे पाते।।

बोधित बुद्ध मुनीवर हे!
ऋद्धि प्राप्त ऋद्धिश्वर हे!
परम सुखी गुण ईश्वर हे!
नमस्कार जगदीश्वर हे!।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 12 ।।

ऋद्धि मंत्र

ऋद्धि मंत्र

णमो उजु मदीणं

अर्थः ऋजुमति मनः पर्यायज्ञानियों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

हे ऋजुमति जिन नमन-नमन,
सरल सहज मति नमन-नमन।
पर के मन में क्या-क्या है,
क्या विचार चिंतन क्या है।।

सरल भाव को जो जाने,
ऋजुमति मनपर्यय माने।
यह ऋजुता भी किस कारण,
इसका कारण साधारण।।

यथार्थमति को विषय करे,
सत्य वचन को विषय धरे।
सरल काय गति अर्थ सभी,
जाने ऋजुमति ज्ञान अभी।।

समय-समय होने वाली,
काय निर्जरा तपशाली।
ऋजुमति मनपर्यय जाने,
सूक्ष्म तत्त्व हम श्रद्धाने।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 13 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो विउल मदीणं

अर्थ: विपुलमति मनः पर्यायज्ञानियों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

जो विचार पर के मन में,
वह जाने मुनि निज मन में।
जो विशाल मति प्रकटाते,
वही विपुलमति कहलाते।।

द्रव्य क्षेत्र सब विपुल-विपुल,
काल भाव सब विपुल-विपुल।
एक समय जो कर्म झरें,
विपुल मतीश्वर ज्ञान धरें।।

पैंतालीस लाख योजन,
क्षेत्र जानते ये ऋषिजन।
असंख्यात भव ज्ञान रहा,
आगम में यह कथन अहा।।

सब द्रव्यों सब भावों को,
असंख्यात पर्यायों को।
जाने ऋद्धि विपुलमति जिन,
मन वच तन से नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 14।।

ऋद्धि मंत्र

णमो दस पुव्वीणं

अर्थः अभिन्न दसपूर्वी जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

दस पूर्वीजिन नमन-नमन,
धवला जी! का यहाँ कथन।
दस पूर्वी के भेद कहे,
भिन्न-अभिन्नज नाम कहे।।

ग्यारह अंगों को पढ़कर,
नौ पूर्वों से भी बढ़कर।
दशम पूर्व विद्यानुवाद,
मंत्र साधना के पश्चात्।।

विद्या लोभ नहीं आता,
अभिन्न पूर्वी कहलाता।
कर्मक्षयों का अभिलाषी,
त्यागधर्म का विश्वासी।

भिन्न पूर्वव्रत पतित हुए,
वे जिनत्व से रहित हुए।
अतः अभिन्न पूरब जिनवर!
नमन करूँ पद में शिरधर।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 15।।

ऋद्धि मंत्र

णमो चउदस पुव्वीणं

अर्थः चौदह पूर्वधारी जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

चौदह पूर्वों के ज्ञाता,
जिनवर नमूँ झुका माथा।
समस्त श्रुत के धारक हो,
श्रुत केवलि श्रुत कारक हो।।

प्रथम पूर्व से अंतिम तक,
चौदह पूर्वों के साधक।
आदि बिना हो अंत कहाँ,
अत: सभी का ग्रहण यहाँ।।

लोक बिन्दु महिमाशाली,
सर्वोत्तम गरिमाशाली।
देव पूजने आते हैं,
ऋषि विश्वास दिखाते हैं।।

कभी नहीं पाते मिथ्यात्व,
नहीं असंयम को हों प्राप्त।
यही विशेषता भारी है,
सचमुच अचरजकारी है।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 16 ।।

ऋद्धि मंत्र

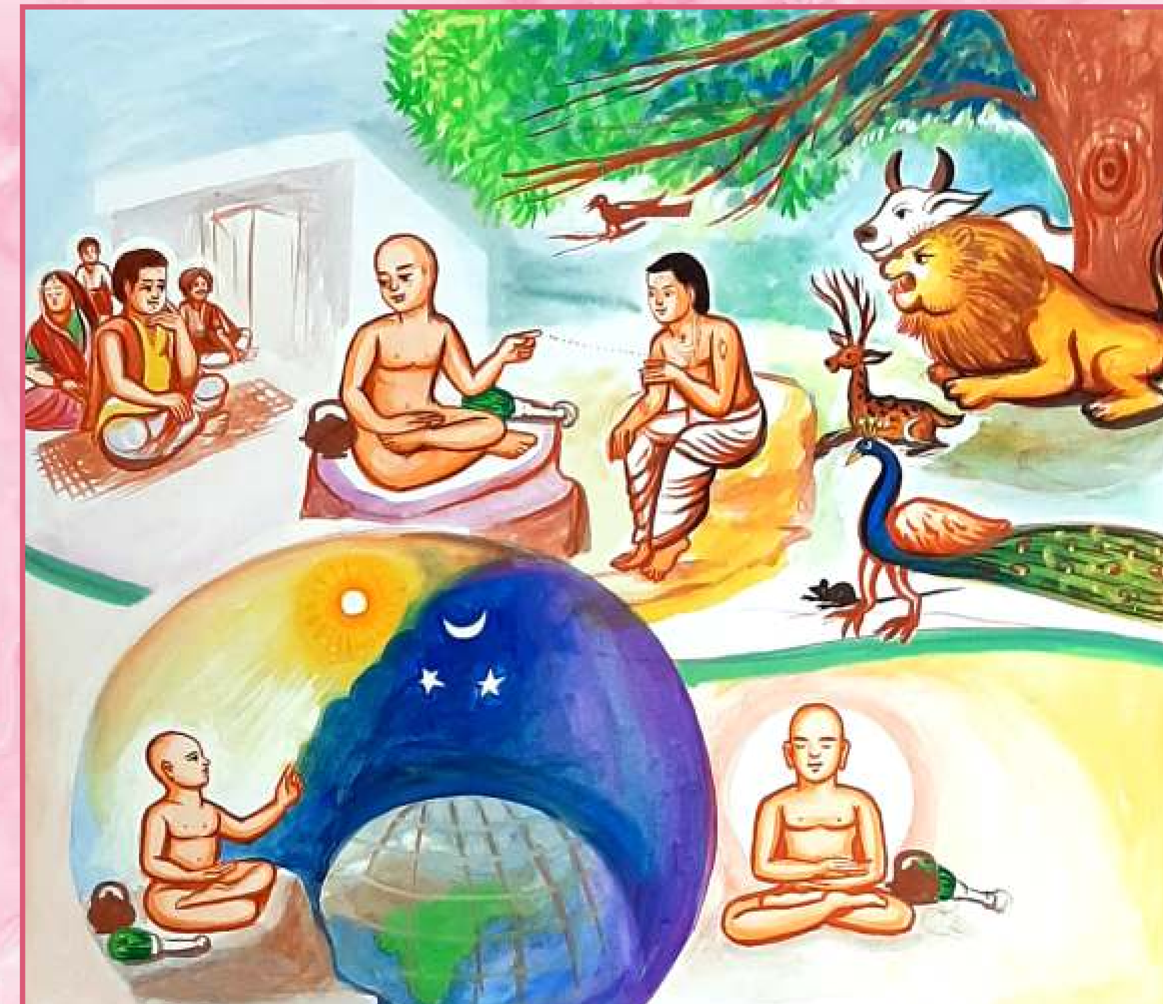

ऋद्धि मंत्र

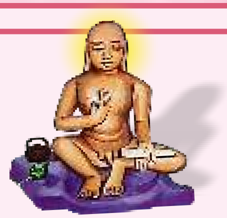

णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं

अर्थः अट्ठांगमहानिमित्तों में कुसलता को प्राप्त जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

अंग देख नर पशुओं के,
सुख-दुख जाने ऋषि उनके।
पशु-पक्षी के स्वर सुनके,
सुख-दुख जाने जन जनके।।

तिल भौंरी व्यंजन लखके,
भला-बुरा जाने सबके।
शंख चक्र स्वस्तिक लक्षण,
देखें जानें करे कथन।।

छिन्न वस्त्र आभूषण को,
देखें जानें तद्गुण को।
भू धरती के देखें गुण,
हानि लाभ का करें कथन।।

देखे स्वप्न छिन्नमाला,
जाने क्या होने वाला।
सूर्य चन्द्र ग्रह तारागण,
इन्हें देखकर करें कथन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 17।।

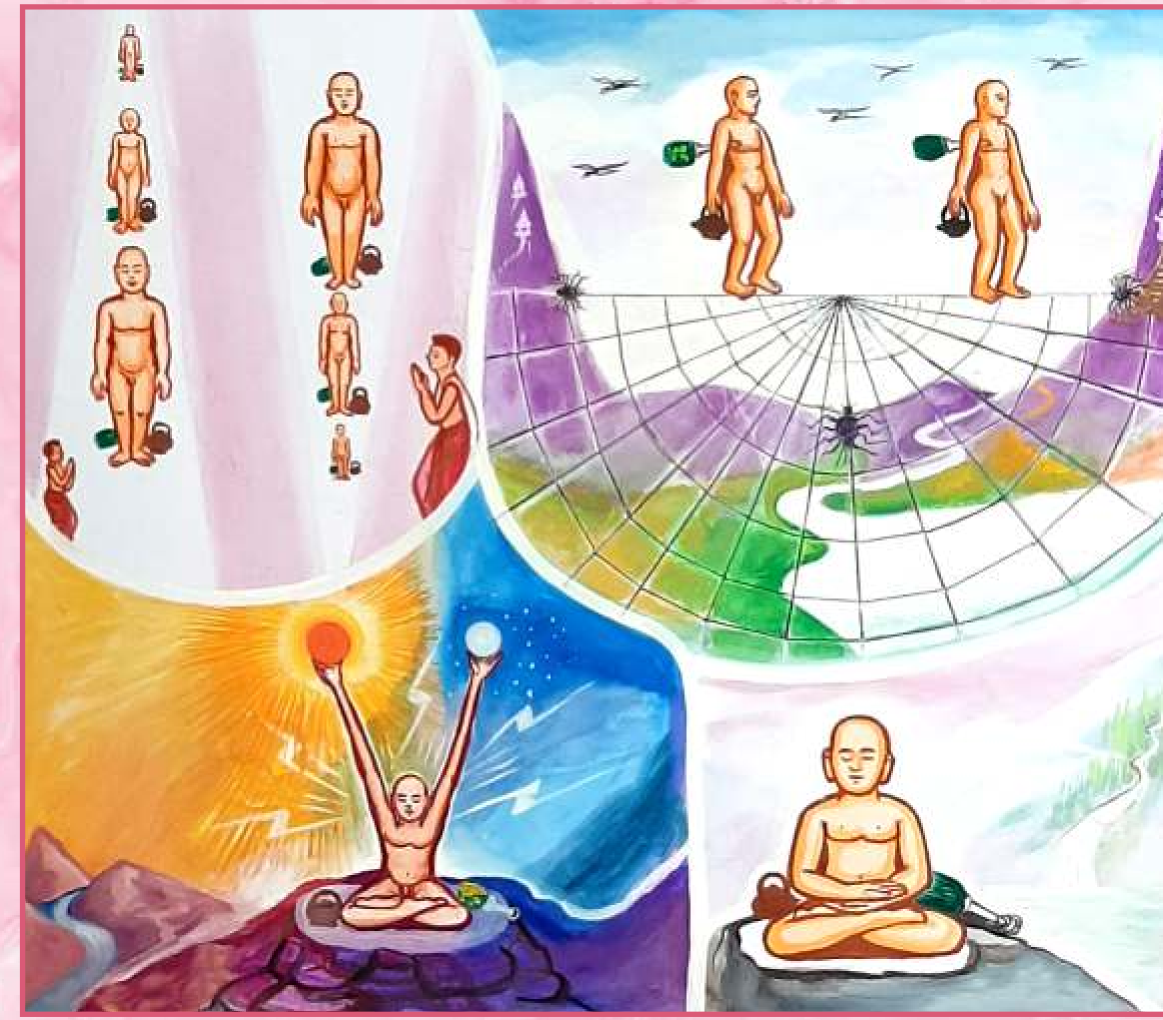

ऋद्धि मंत्र

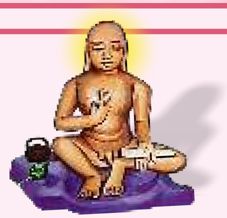

णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं

अर्थः विक्रियाऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

प्रथम विक्रिया अणिमा जिन!
महाकाय करलें अणु सम।
ऋद्धि विक्रिया महिमा जिन!
लघु तन करे सुमेरु सम।।

ऋद्धि विक्रिया लघिमा जिन!
तन्तु पर चलने सक्षम।
प्राप्ति विक्रिया जो पालें,
सूर्य चन्द्र को वे छूलें।।

ऋद्धि प्राकाम्या जो पाते!
अबध गमन करते जाते।
ऋद्धि ईशता जो पाते,
सर्व भोग का बल पाते।।

ऋद्धि वशी जिन कहलाते,
निज पर वश में हो जाते।
काम-रूपता ऋद्धि रहे,
रूपकला की सिद्धि रहे।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 18।।

ऋद्धि मंत्र

णमो विज्जाहराणं

अर्थः विद्याधर जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

जातिज, कुलज, तपज विद्या,
तीन तरह की है विद्या।
मातृपक्ष जातिज विद्या,
पितृपक्ष कुलज विद्या।।

तपो सिद्ध हो तप विद्या,
विद्याधर को सब विद्या।
इनमें किनका यहाँ ग्रहण,
विद्या ऋद्धि श्रमण शरण।।

तप से विद्या सिद्ध हुई,
तीनों लोक प्रसिद्ध हुई।
फिर भी काम न लेते हैं,
इतने निष्पृह होते हैं।।

निज अज्ञान निवारण हो,
तप विद्या का धारण हो।
विद्याधर जिन नमन-नमन,
विद्या ऋद्धि धारी श्रमण।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 19।।

ऋद्धि मंत्र

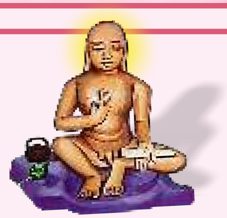

णमो चारणाणं

अर्थः चारण ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

जंघा-पुष्प बीज जल फल,
तन्तु श्रेणी आकाश सकल।
लेकर इनका आलम्बन,
सुख पूर्वक ऋषि करें गमन।।

अरे कमलिनी का पत्ता,
जैसे जल पर हो चलता।
वैसे जलचारण जल पर,
चलते जाये करुणाधर।।

तन्तु बीज, फल, फूल सभी,
इनके लक्षण सरल सुधी।
जंघा चारण अद्भुत हैं,
चल सकते भूमिगत हैं।।

कितना अद्भुत तप साधा,
नहीं किसी को कुछ बाधा।
चउ अंगुल भू से ऊपर,
नभचारण चलते ऋषिवर।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 20।।

ऋद्धि मंत्र

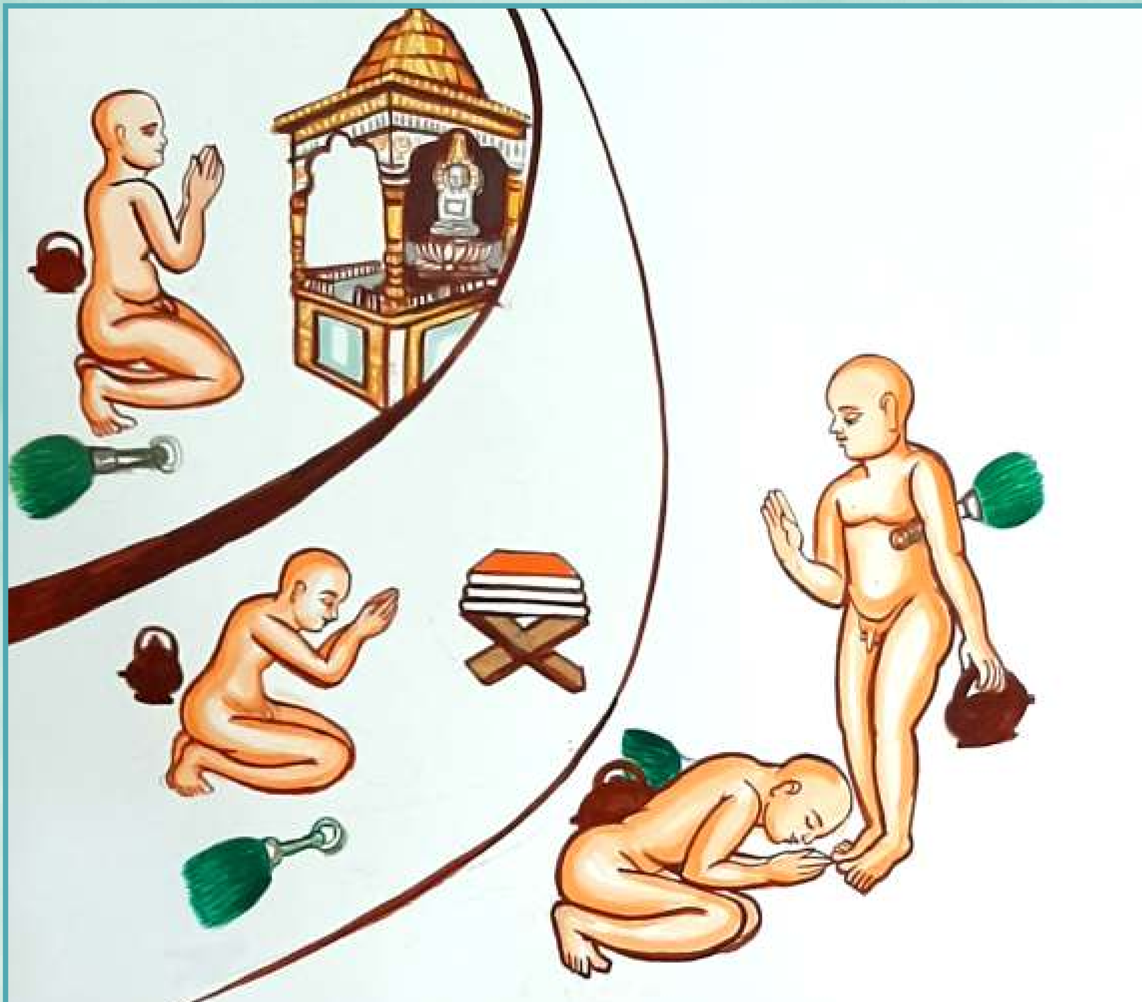

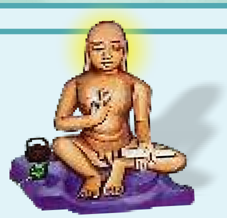

णमो पण्ण समणाणं

अर्थः प्रज्ञाश्रमण जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

ओं नमः प्रज्ञा श्रमणाय,
नमो जिनाय नमो जिनाय।
औत्पत्तिकी वैनयिकी,
पारिणामिकी कर्मजकी।।

पूर्व जन्म में विनय जनित,
संस्कार से उत्पादित।
औत्पत्तिकी प्रज्ञा जिन,
प्रज्ञासागर नमन-नमन।।

द्वादशांग को विनय सहित,
पढ़ने से जो हो सिद्धित।
विनय भाव से नमन-नमन,
पारिणामिकी नमन-नमन।।

श्री गुरु के उपदेश बिना,
तप औषध से महामना।
बुद्धि कर्मजा प्रकटाते,
चारों को हम शिर नाते।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 21 ।।

ऋद्धि मंत्र

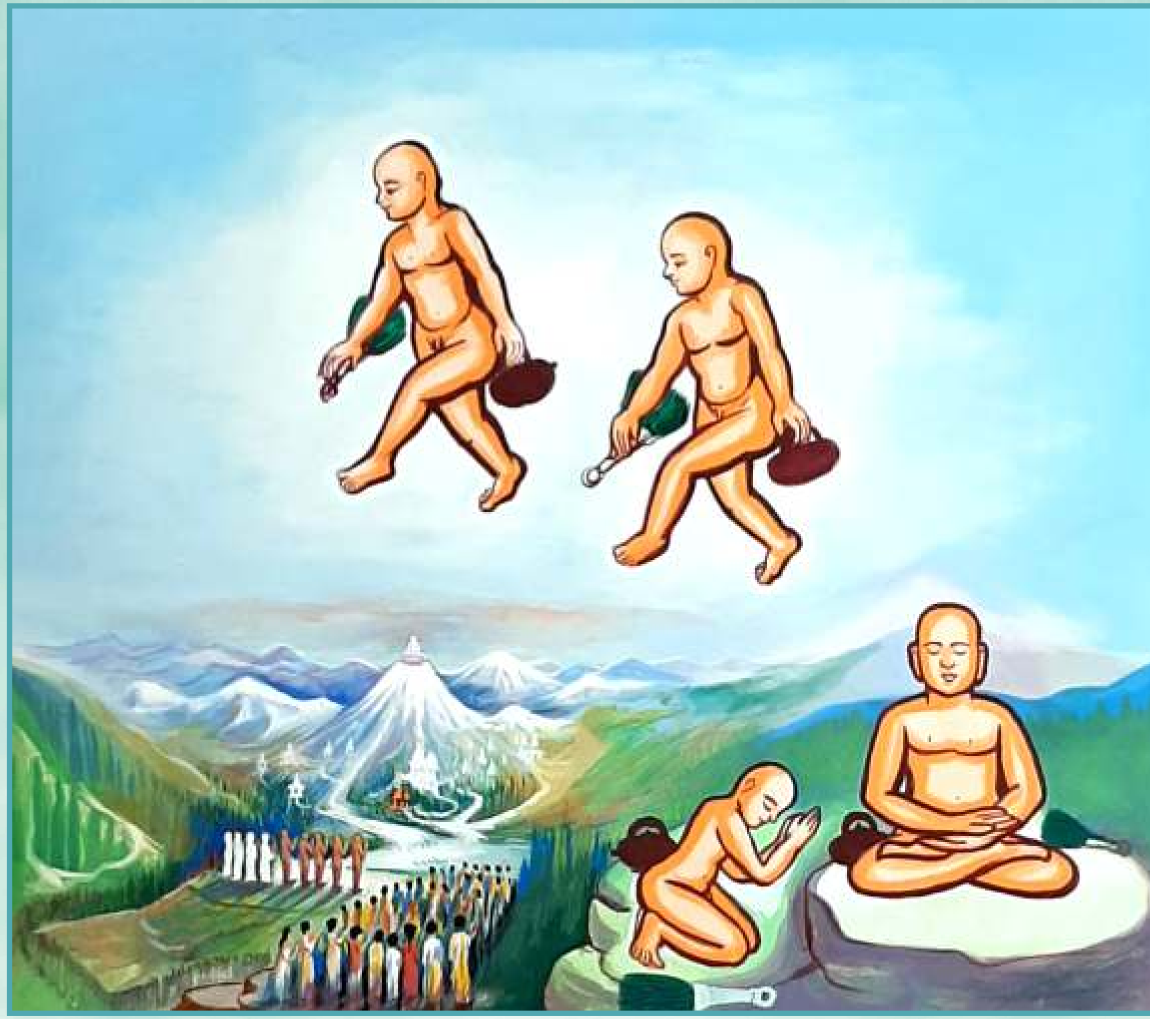

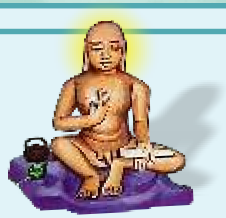

णमो आगासगामीणं

अर्थः आकाशगामी जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

तप बल से आकाश गमन,
करने वाले हे ऋषि जिन।
भूमण्डल का नमन-नमन,
स्वीकारो नभगामी जिन।।

नभचारण अरु नभगामी,
क्या अंतर हैं जिन स्वामी!
चरण कहो चारित्र कहो,
संयम पापनिरोध कहो।।

इनमें जो हैं कुशल करण,
कहलाते हैं ऋषि चारण।
तपश्चरण बल से पाते,
अम्बरगामी कहलाते।।

नभचर जीवों के रक्षक,
हे ऋद्धीश्वर संरक्षक!
नभगामी जिन नमन-नमन,
शिवगामी जिन नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 22 ।।

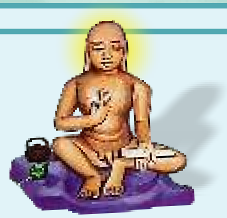

णमो आसी विसाणं

अर्थः आशीर्विष जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

आशिविष जिन नमन-नमन,
महाश्रमण हे महाश्रमण!
अविद्यमान की अभिलाषा,
आशिष् की यह परिभाषा।।

ये मुनि कहदें मर जाओं,
भूखे-भूखे रह जाओं।
या कहदें शिर छेदन हो,
अंग-अंग का भेदन हो।।

अरे सविष तू निर्विष हो,
मृत्युनिकट मृत्युंजय हो।
व्याधि वेदना तत्क्षण जा,
री दरिद्रता तू भग जा।।

ऋद्धिवंत होने पर भी,
शक्तिवंत होने पर भी।
ऐसा कार्य नहीं करते,
उनके पद हम शिर धरते।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 23 ।।

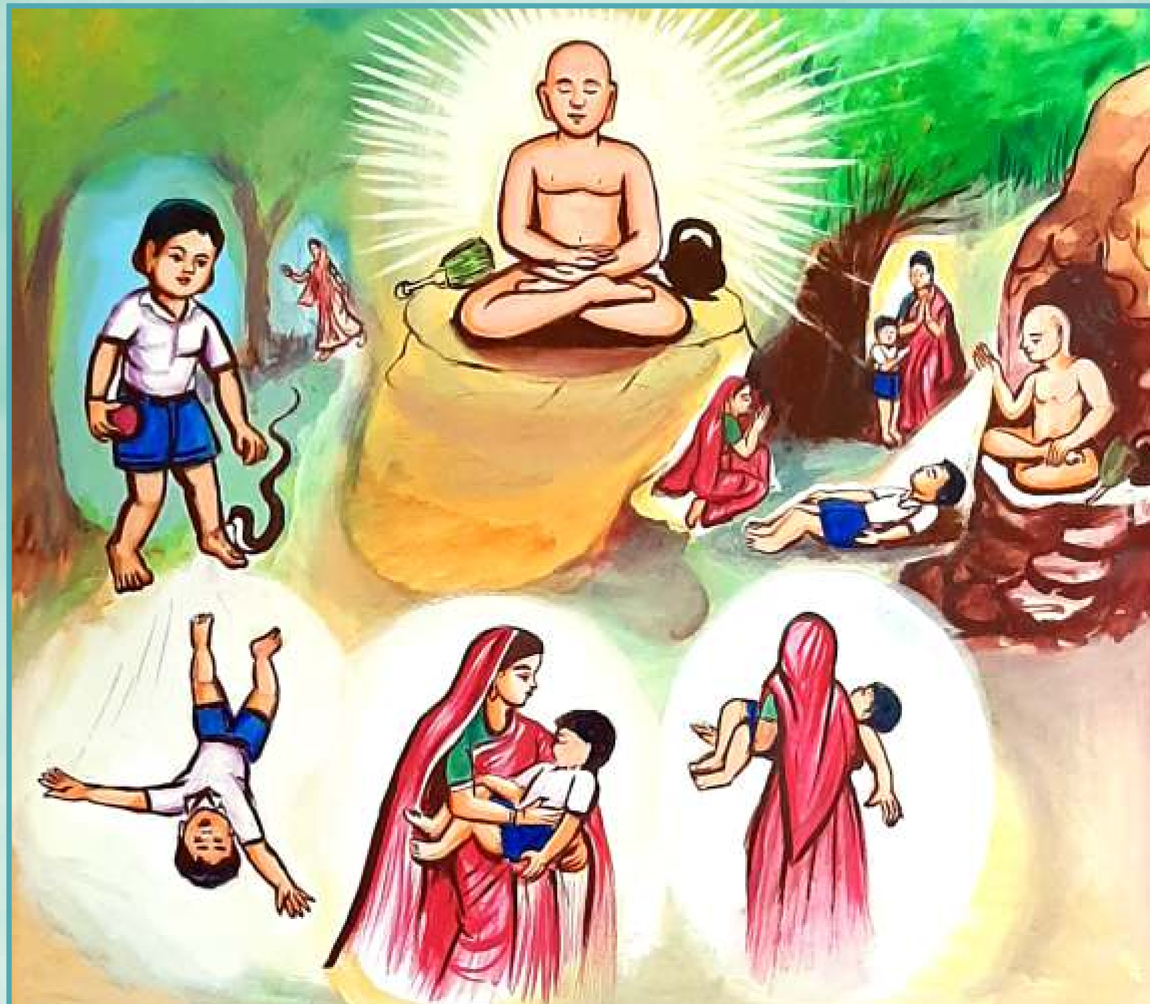

ऋद्धि मंत्र

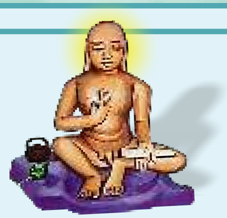

णमो दिट्ठिविसाणं

अर्थः दृष्टिविष जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

दृष्टि सविष जिन नमन-नमन,
नयन और मन दृष्टि ग्रहण।
नयन और मन दृष्टि रही,
क्रिया सहित ही पुष्टि रही।।

कभी किसी से त्रस्त हुआ,
अंतरंग से रुष्ट हुआ।
अभी मारता हूँ इसको,
देखे सोचे ऋषि जिसको।।

अथवा ऐसी क्रिया करें,
अशुभ कार्य का भाव धरें।
दृष्टि सविष ऋषि कहलाते,
किस कारण पूजे जाते।।

भला चाह तो भला करें,
बुरा चाह तो बुरा करें।
किन्तु नहीं कुछ भी करते,
धन्य-धन्य समता धरते।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 24 ।।

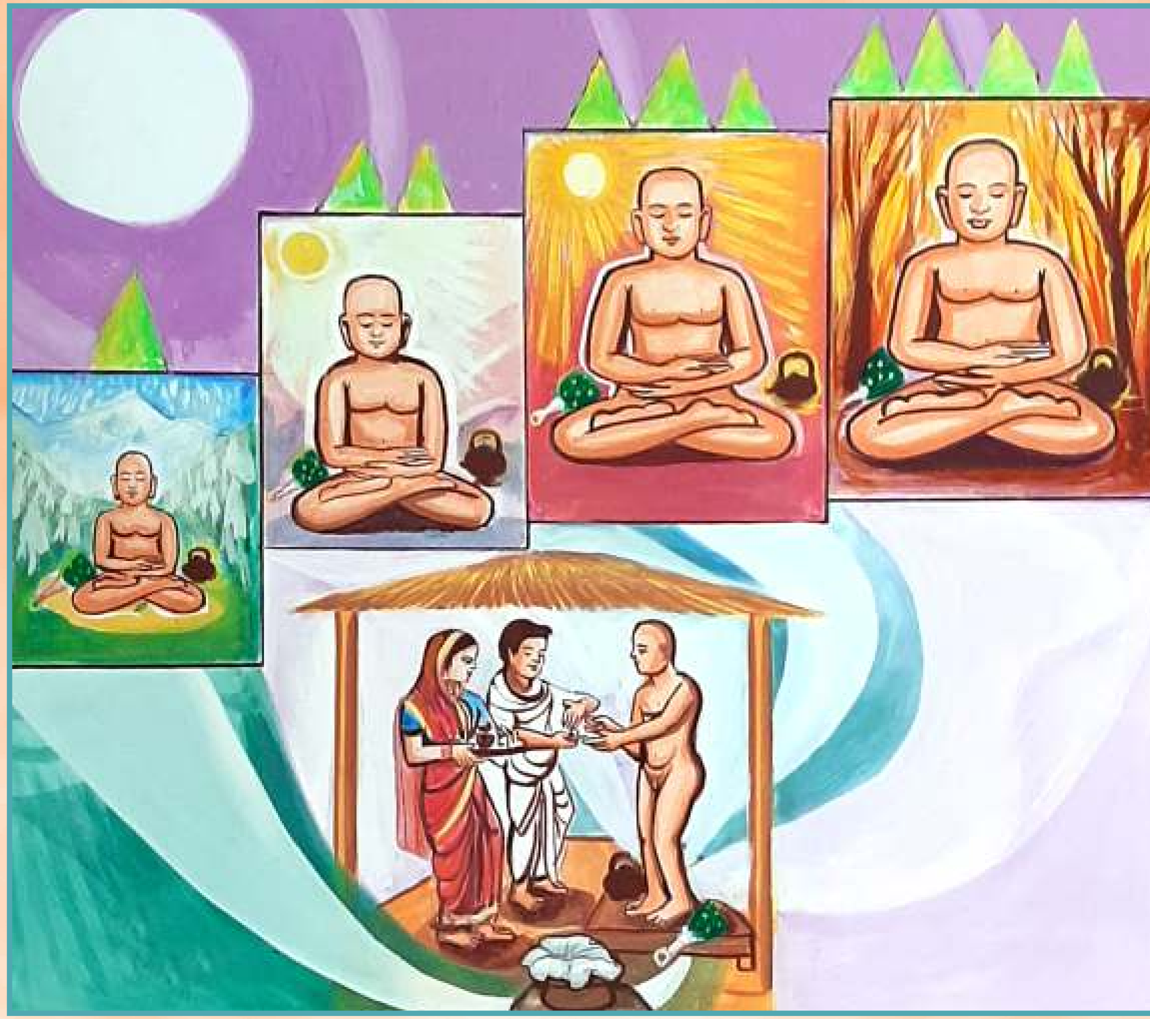

ऋद्धि मंत्र

णमो उग्ग तवाणं

अर्थः उग्रतप धारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

उग्र-उग्र तप धारक जिन!
तथा उग्र तप धारक जिन!
उभय तपस्वी! नमन-नमन,
सदा यशस्वी! नमन-नमन।।

इक उपवास इक आहार,
दो उपवास इक आहार।
त्रय उपवास इक आहार,
चउ उपवास इक आहार।।

इस प्रकार छह-छह महिना,
तप करते जो महामना।
अथवा करते जीवन भर,
उग्र तपस्वी वे ऋषिवर।।

उग्र-उग्र तप कहलाता,
श्रद्धा से पूजा जाता।
उत्तम फल शिवपद दाता,
मध्यम फल दे सुख साता।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 25 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो दित्त तवाणं

अर्थः दीप्ततप धारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

दीप्त ऋद्धि के धारक जिन,
दीप्त तपस्वी नमन-नमन।
वैला तैला अरु चौला,
छैला वारा या सौला।।

कठिन-कठिन उपवास धरे,
तेज कान्ति तन से उभरे।
शुक्ल पक्ष के चन्दा सम,
बढ़ता जाता तप क्रम-क्रम।।

काय कान्ति बढ़ती जाती,
देह शक्ति बढ़ती जाती।
रक्त मांस बढ़ता जाता,
तपो तेज ऐसा आता।।

क्षुधा वेदना नहीं-नहीं,
काम वेदना नहीं नहीं।
दीप्त ऋद्धि जयवन्त रहे,
पूजित काल अनंत रहे।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 26 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो तत्त तवाणं

अर्थः तप्ततप ऋद्धि धारकों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

ये मुनिवर आहार करें,
किन्तु नाहीं निहार करें।
जैसे लोहे का गोला,
जिसे आग में हो डाला।।

सभी ओर से जल पीता,
रहता है सूखा-सूखा।
मूत्र शुक्र मल आदि सभी,
पूर्ण शुष्क हो गये तभी।।

प्रबल तपस्या के द्वारा,
इतना अद्भुत तपधारा।
तप ही जिनका तप्त हुआ,
चित्त नहीं संतप्त हुआ।।

तप्त ऋद्धि जिन! नमन-नमन,
तप्त तपस्वी महा श्रमण।
शक्ति जगे मुझमें ऐसी,
करूँ साधना तुम जैसी।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 27 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो महा तवाणं

अर्थः महातप ऋद्धि धारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

महातेज में जो कारण,
वही महातप कर धारण।
ऋद्धि महातप सिद्ध हुई,
तीनों जगत प्रसिद्ध हुई।।

अणिमा आदिक आठों गुण,
जल चरणादिक आठों गुण।
हुए अलंकृत जिन मुनि में,
चमक उठी आभा तन में।।

सर्वोषधि स्वरूपी हो,
औ अक्षीण स्वरूपी हो।
पाणिपात्र आया भोजन,
हो अमृतमय परिवर्तन।।

इन्द्रों से भी बलशाली,
चार ज्ञान मय ज्ञानबली।
ऋद्धि महातप धारक जिन,
मन, वच, तन से नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 28 ।।

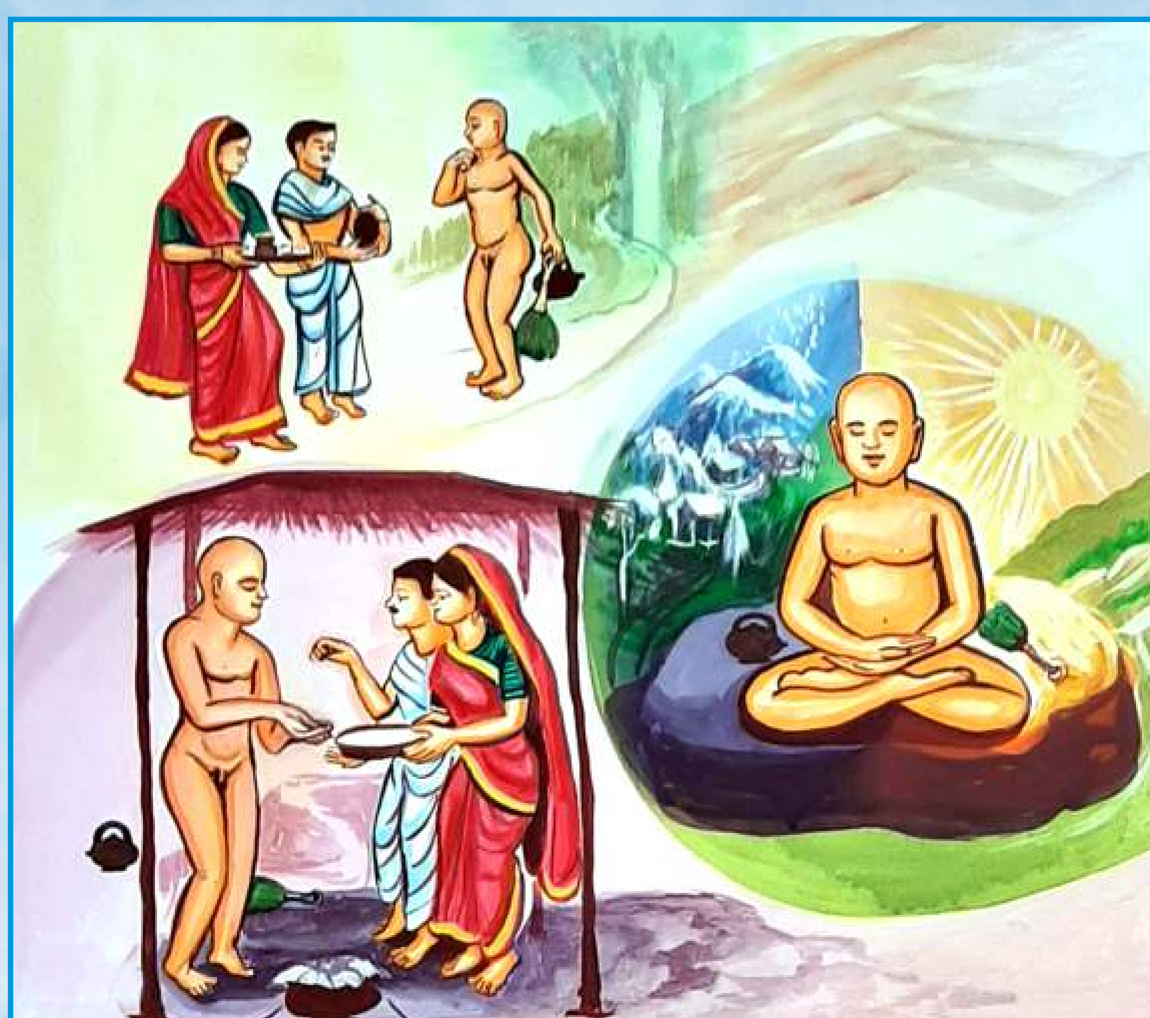

षष्ठ खंड

णमो घोर तवाणं

अर्थः घोर तप ऋद्धि धारी जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

मन सुमेरु सा जिनका हो,
अहो घोर तप उनको हो।
छह-छह महिना अनशन कर,
एक ग्रास तक ऊनोदर।।

भिक्षा करें प्रतिज्ञा से,
जिन आगम की आज्ञा से।
गर्मी आग उगलती हो,
शीत लहर जब चलती हो।।

तब भी तुम आकाश तले,
तप करते हो भले-भले।
इसी तरह अभ्यन्तर तप,
सर्वोत्कृष्ट सभी तप-तप।।

तपो जनित यह ऋद्धि हुई,
घोर तपों की सिद्धि हुई।
ऋद्धि घोर तपधारी जिन!
हे ऋद्धिश्वर नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 29 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो घोर गुणाणं

अर्थ: घोर गुण ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

घोर-तपस्या को धारा,
आत्मशक्ति तप स्वीकारा।
तप से जो उद्‍भूत हुई,
घोर ऋद्धि सद्‍भूत हुई।।

महाशील के धारी हो,
संयत पंचाचारी हो।
निज पर के हितकारी हो,
दु:खहारी सुखकारी हो।।

घोर कार्य की शक्ति धरें,
कभी कार्य वह नहीं करें।
कारण है पर कार्य नहीं,
कार्य होय अनिवार्य नहीं।।

चौरासी लख गुणधारी,
सदा संयमी अविकारी।
घोर तपस्या तपते हैं,
कर्म निरंतर खपते हैं।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 30 ।।

णमो घोर परक्कमाणं

अर्थः घोर पराक्रम ऋद्धिधारक जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

घोर पराक्रम ऋद्धि श्रमण!
ऋद्धिश्वर जिन नमन-नमन।
पृथ्वी तल को निगल सकें,
सागर का जल सुखा सकें।।

चाहें जल बरसा सकते,
पर्वत हिला डुला सकते।
ऐसा अद्‌भुत बल पायें,
घोर पराक्रम कहलायें।।

प्रबल पराक्रम जिनका है,
गुणानुवाद यह उनका है।
किन्तु नहीं कुछ भी भ्रम है,
अहो महर्षि वन्दन है।।

प्रबल भेद विज्ञानी हैं,
सप्त तत्त्व के ज्ञानी हैं।
समयसार के संवेदक,
स्वस्वरूप के संशोधक।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 31 ।।

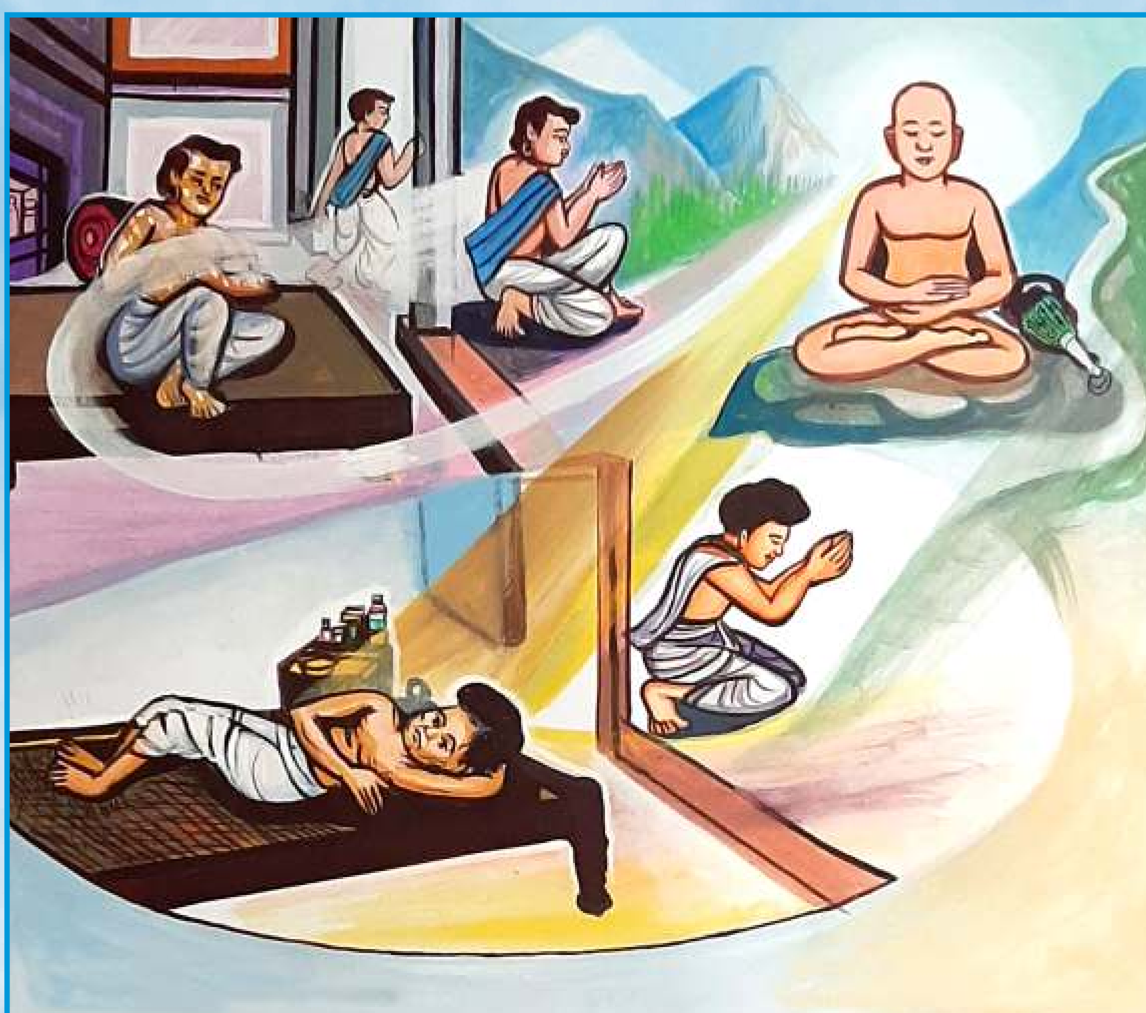

णमो घोर गुण बंभयारिणं

अर्थः अघोरगुण ब्रह्मचारी ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

गुण अघोर किसका बोधक?
शान्त अर्थ का सम्बोधक।
ब्रह्म शब्द क्या अर्थ धरे?
तेरह विध चारित्र अरे।।

आत्म शान्ति के पोषण का,
सभी दुःखों के शोषण का।
परम शान्त गुण जिनमें है,
यह अघोर गुण उनमें है।।

ईति-भीति सब शान्त करें,
बध-बन्धन सब शान्त करें।
वैर-कलह सब शान्त करें,
शान्ति शक्ति वह आप धरें।।

बहती-बहती चले पवन,
छूती जाये मुनि का तन।
तो सब रोग भगायेगी,
सारे कष्ट मिटायेगी।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 32 ।।

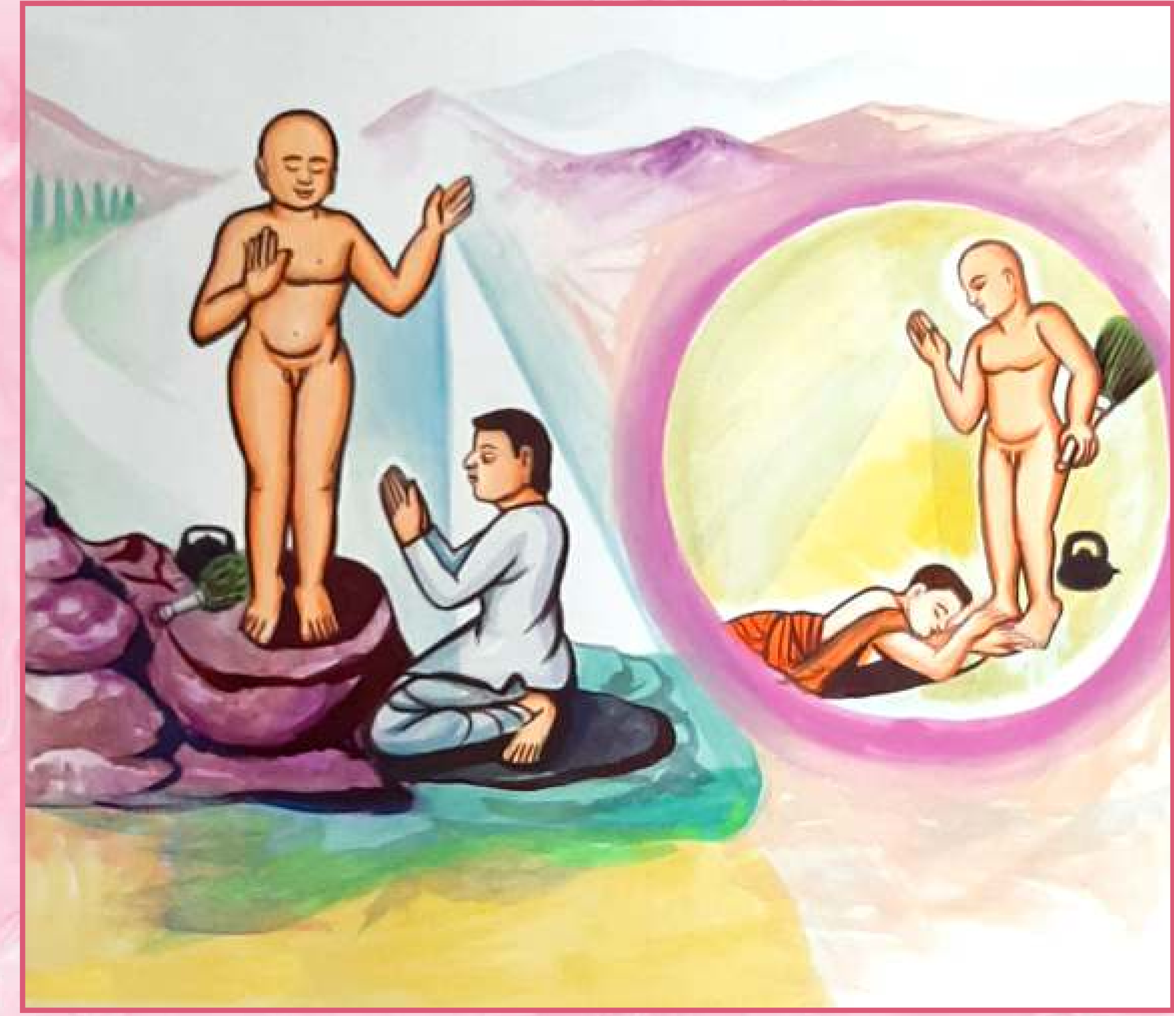

ऋद्धि मंत्र

णमो आमोसहि पत्ताणं

अर्थः आमर्षौषधि ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

परम श्रमण औषध आलय,
कर संस्पर्श चिकित्सालय।
मुनिवर आप चिकित्सक हैं,
निर्मल निर्विचिकित्सक हैं।।

तप संस्पर्श चिकित्सा है,
व्याधि विनाशक क्षमता है।
अहो प्रभाव तपस्या का,
हल प्रत्येक समस्या का।।

आप वैद्य जग रोगी है,
छूकर हुआ निरोगी है।
इसीलिए तो कभी कहीं,
चरण छूओ तो मना नहीं।।

एक बार छू लेते जो,
सर्व रोग हर लेते वो।
आमर्ष औषधि ऋद्धि जिन,
परामर्ष कर नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 33 ।।

णमो खेल्लोसहि पत्ताणं

अर्थः खेल्लौषधि ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

जिनके मुह का थूकन भी,
नाक छिनकने का मल भी।
या जिह्वा से लार बही,
कफ विष्ठा मल मूत्र सभी।।

ये सब खेल कहाते हैं,
औषधमय हो जाते हैं।
जिनको ये मल छू जायें,
रोग मुक्त वे हो जायें।।

भले जनम से रोगी हों,
सर्व दुखों के भागी हों।
किन्तु भाग्यशाली होंगे,
परम पुण्यशाली होंगे।।

रोगी जन के रोग सभी,
छू-मंतर हो गये अभी।
हे खेलौषधि प्राप्त श्रमण,
ऋद्धीश्वर जिन नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 34 ।।

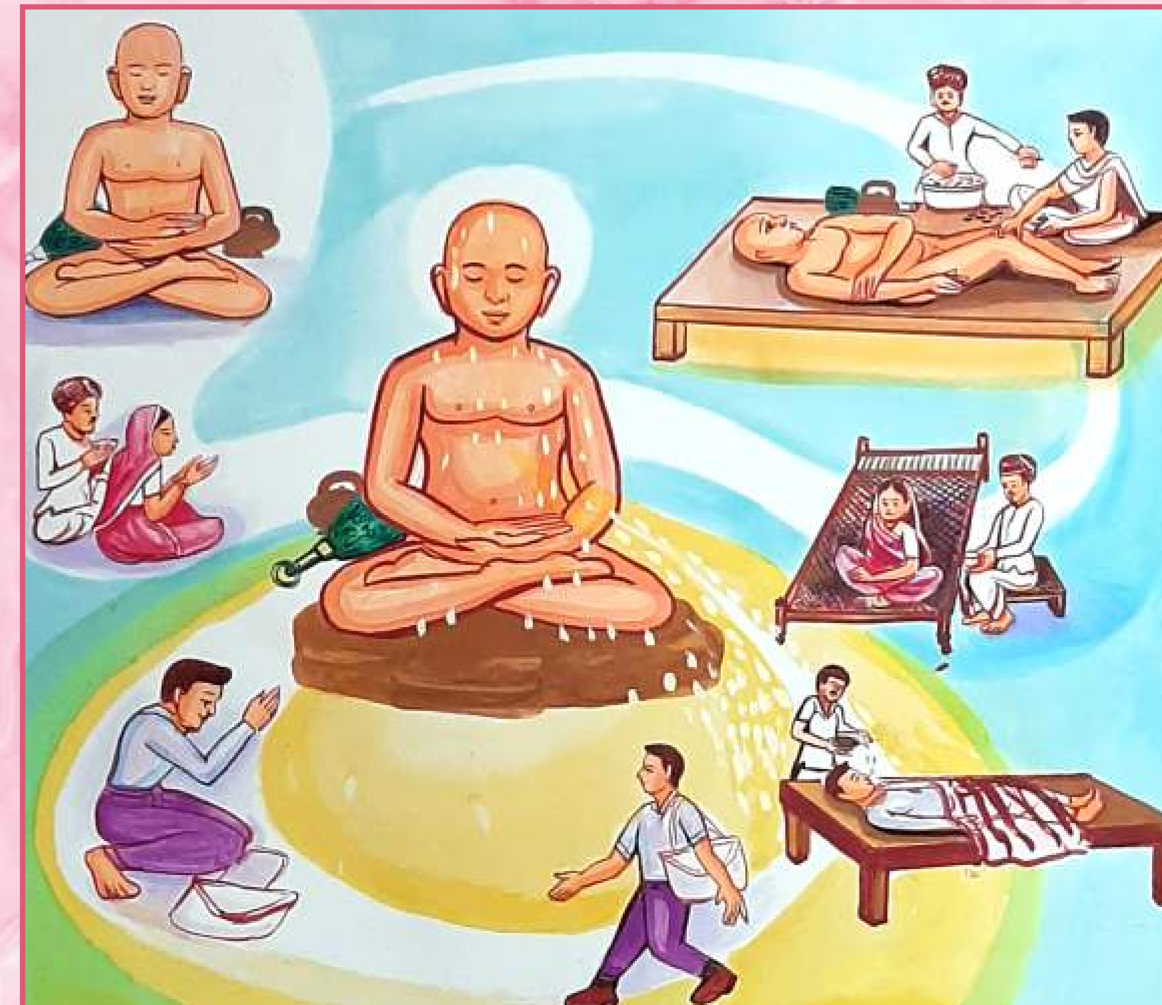

ऋद्धि मंत्र

णमो जल्लोसहि पत्ताणं

अर्थः जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्त जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

बाह्य अंग मल जल्ल कहा,
औषधि गुण को प्राप्त अहा।
जल्लौषधि जिन ऋद्धि श्रमण,
हे उपकारी नमन-नमन।।

धूल धूसरित मन का तन,
मटमैला मटमैलापन।
बहे पसीना शिख से नख,
निष्पृह रोगी समता रख।।

जो ममत्व के त्यागी हैं,
वे मुनिवर बड़भागी हैं।
कार्योत्सर्ग सदा करते,
निर्मल ध्यान सदा धरते।।

काला-काला मैला तन,
बना औषधि का उपवन।
अरे मैल की वह बतियाँ,
बनी रोग हर औषधियाँ।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 35 ।।

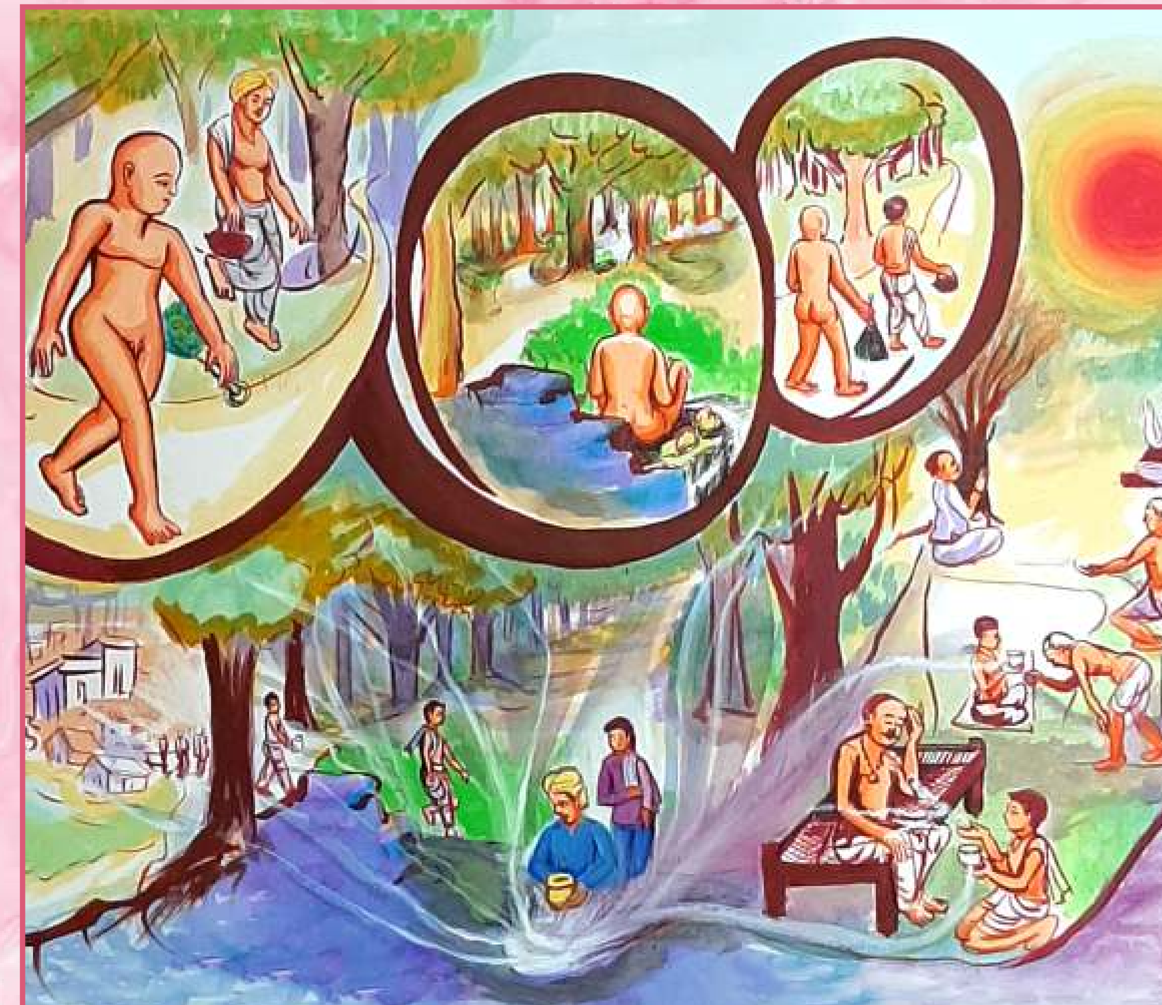

णमो विप्पोसहि पत्ताणं

अर्थ: विष्पौषधि ऋद्धि प्राप्त जनों का नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

तप सम्राट तपस्वी हे!
मौनी महा मनस्वी हे!
ओजस्वी तेजस्वी हे!
यति सर्वत्र यशस्वी हे!

द्वादश तप के आराधक,
समिति प्रतिष्ठापन पालक।
तपोपूत है अन्तर्मन,
श्वास-श्वास धड़कन-धड़कन।।

जीवराज आतम भगवन्,
नित अखण्ड गुणग्राम सदन।
अशुचि रूप है मुनिवर तन,
हुआ तपस्या से पावन।।

अरे देह से नि:सृत मल,
मूत्र-शुक्र हो रहे सफल।
औषधियों के धाम बनें,
उन ऋषियों को नमें-नमें।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 36 ।।

ऋद्धि मंत्र

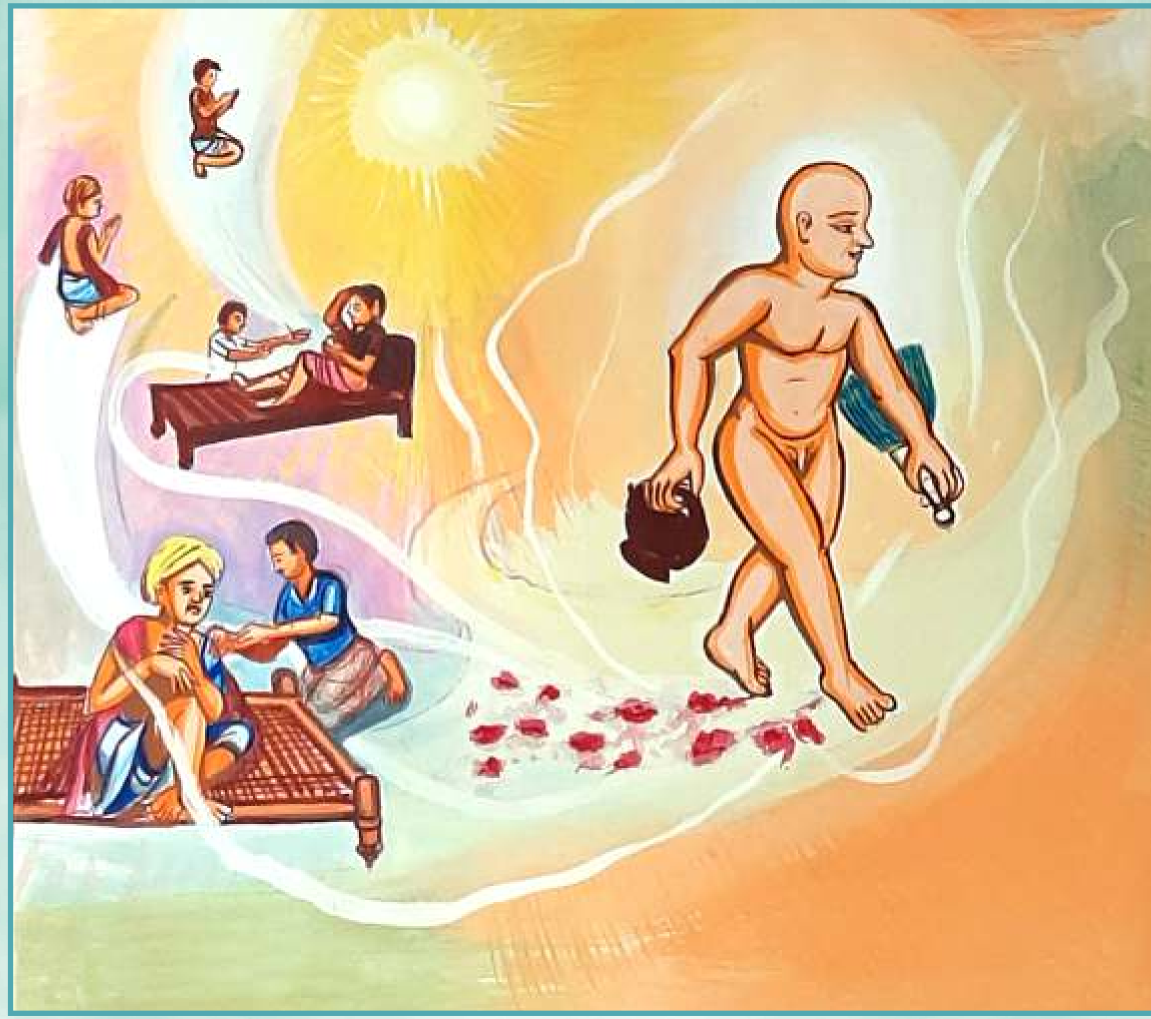

णमो सव्वोसहि पत्ताणं

अर्थः सर्वौषधि ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

भोजन से रस बनता हैं,
औषधिमय परिणमता हैं।
रस से बनता रक्त अरे,
औषधिमय परिणमन करे।।

मांस तथा मेदा हड्डी,
औषधि औषाधि औषधि ही।
और अपावन कायिक मल,
औषधिवन बन हुए सफल।।

विश्व व्याधियाँ हैं जितनी,
सर्वोषधियाँ हैं उतनी।
मुनियों का चारित्र विचित्र,
तीन लोक को करे पवित्र।।

फल उत्कृष्ट तपस्या का,
हल प्रत्येक समस्या का।
हे सर्वोषधि प्राप्त श्रमण,
ऋद्धीश्वर जिन नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 37 ।।

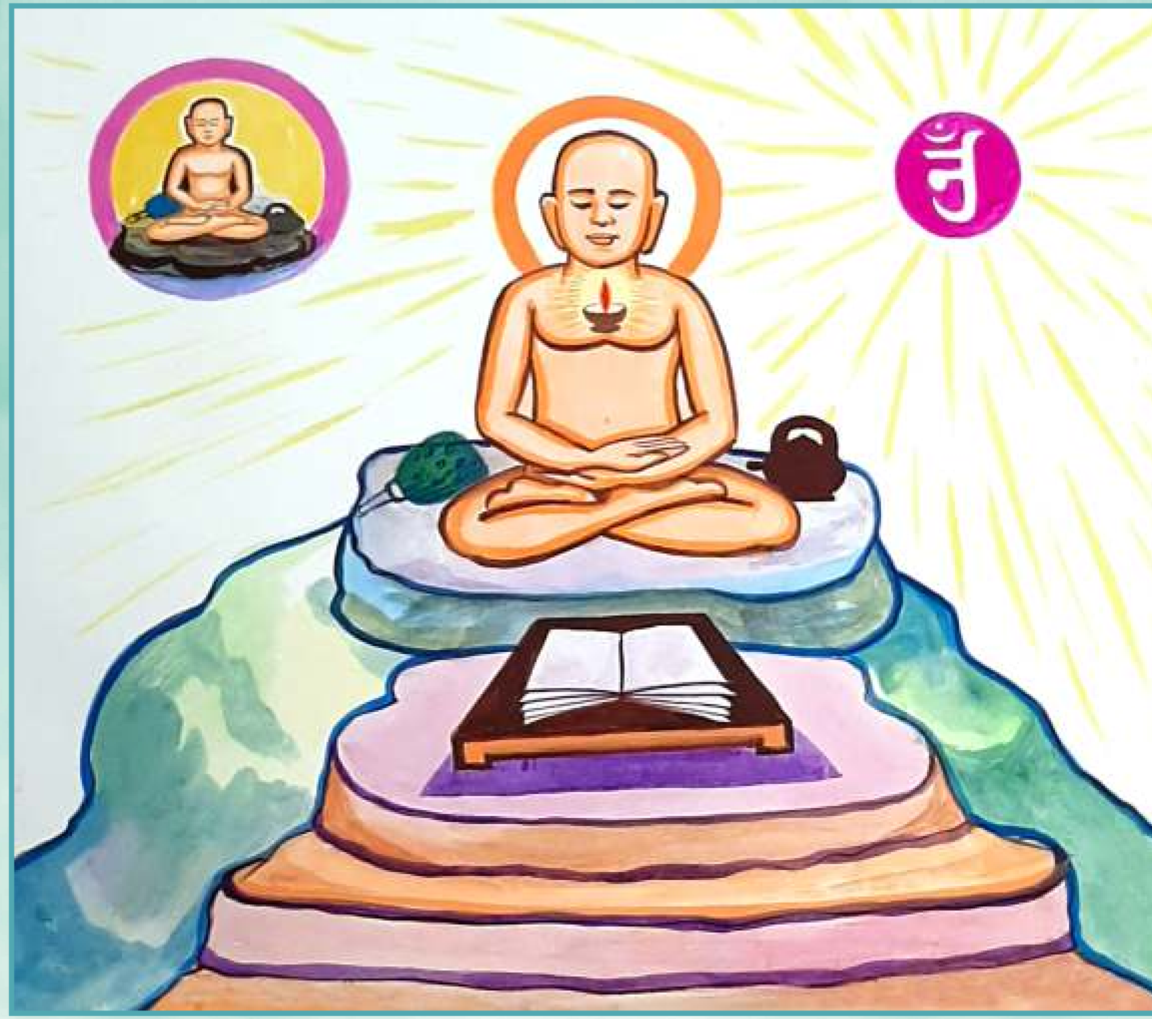

ऋद्धि मंत्र

णमो मण बलीणं

अर्थः मनबल ऋद्धियुक्त जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

श्रम होने पर खेद नहीं,
बिन्दु मात्र भी स्वेद नहीं।
ना विषाद की रेखा है,
मन प्रसादमय देखा है।।

यह बल की परिभाषा है,
आयुर्वेदिक भाषा है।
द्वादशांग में जो वर्णित,
सभी द्रव्य पर्याय सहित।।

उन सबका चिन्तन करते,
किंचित खेद नहीं धरते।
बिन तनाव तन्मय रहते,
चिदानंद चिन्मय रहते।।

मन बल ऋद्धीश्वर मुनिवर,
तपभू लब्धीश्वर मुनिवर।
मनोबली हे नमन-नमन,
अटल मनोबल हो भगवन्।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 38 ।।

ऋद्धि मंत्र

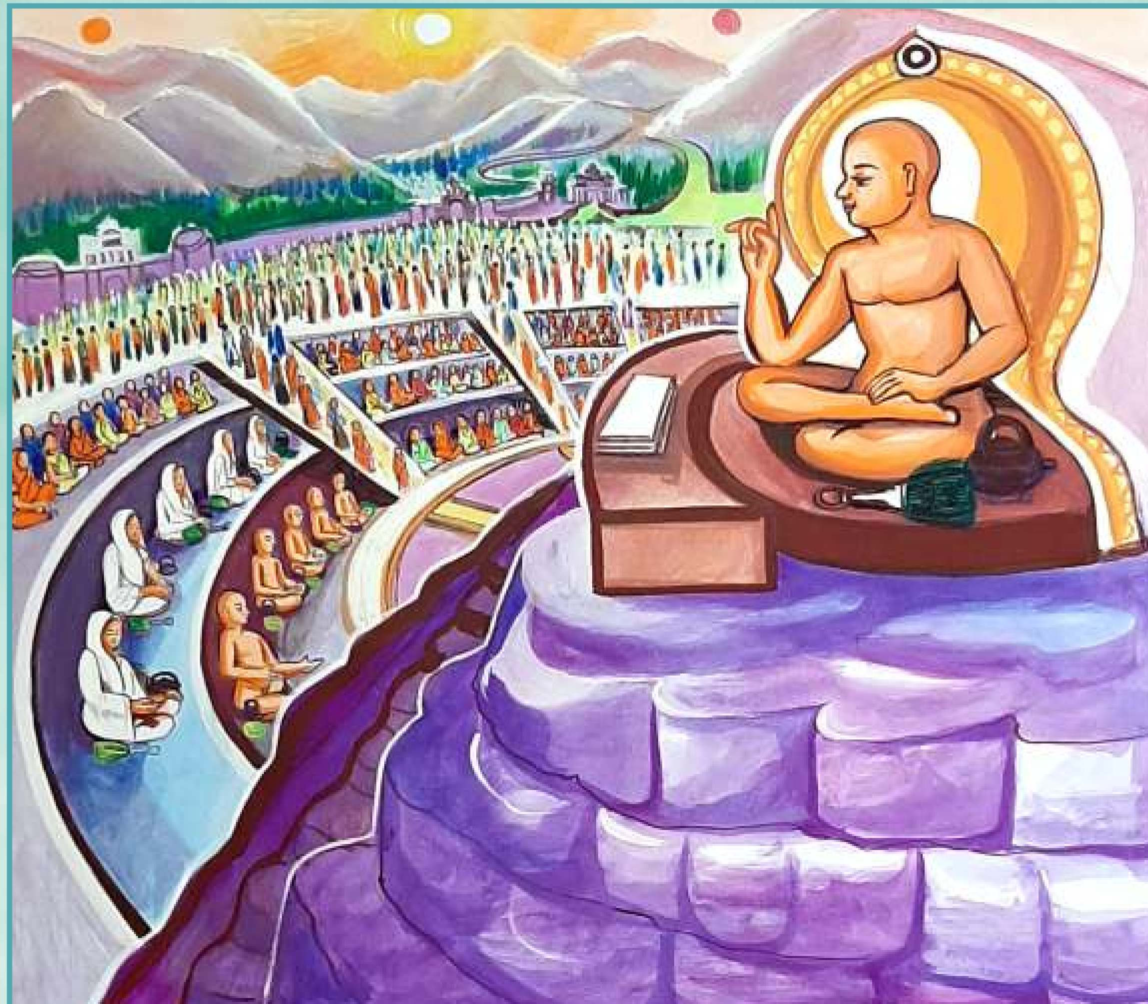

णमो वचि बलीणं

अर्थः वचनबली ऋद्धि जिनों का नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

बार-बार वाचन करके,
द्वादशांग प्रवचन करके।
खेद कभी ना पाते हैं,
वचनवली कहलाते हैं।।

जैन तपस्या की महिमा,
प्रकट हुई तप गुण गरिमा।
अहो वचन बल प्रकटाया,
तप प्रभाव जग ने पाया।।

उनको शुद्ध वचन मन से,
विनय विनीत विनत तन से।
भक्ति भाव वन्दन करता,
मनो भावना शुभ धरता।।

ऐसा नाथ! वचन बल दो,
खेद मुक्त आतम बल हो।
वचनबली जिन नमन-नमन,
ऐसे अनुपम ऋद्धि श्रमण।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 39 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो काय बलीणं

अर्थः कायबली ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

धन्य-धन्य चारित्र विशेष,
काय क्लेश मुक्त संक्लेश।
यथा शक्ति तप धारा जो,
प्रतिपल शुद्ध सँभारा जो।।

उसी भावना के बल से,
श्रमण साधना तप बल से।
काय शक्ति उत्पन्न हुई,
आत्म ऋद्धि सम्पन्न हुई।।

कायबली का कैसा बल,
विस्मयकारी सुबल अटल।
सुनकर अचरज होता है,
मस्तक पदरज ढोता है।।

तीनों लोक उठाकर के,
रखे कहीं ले जाकर के।
ऐसा अद्भुत बल पाया,
फिर भी गर्व नहीं आया।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 40 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो खीर - सवीणं

अर्थः क्षीरास्रावी ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

हे चैतन्य चमत्कारी,
परमर्षि ऋद्धि धारी।
क्षीर दूध कहलाता है,
बिना गाय के आता है।।

पाणिपात्र में ऋषिवर के,
भोजन गिरे जहर भरके।
तत्क्षण दूध सरीखा हो,
अचरज यही अनोखा हो।।

अन्य-अन्य रस विष जैसा,
हो सकता अमृत कैसा।
अरे-अरे वह भी तत्क्षण,
बड़ा विलक्षण यह लक्षण।।

जैसे विष की बूँद अरे,
सुधा-सिन्धु में जाय गिरे।
अमृतमय हो जाती है,
समाधान सिखलाती है।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 41 ।।

णमो सप्पि सवीणं

अर्थः सर्पिस्रावी ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

घृतस्रावी ऋद्धीश्वर जिन!
भक्ति भाव युत नमन-नमन।
सर्पिष्घृत कहलाता है,
तपो शक्ति बतलाता है।।

अंजुल में आया भोजन,
नीरस, विरस, कुरस विषसम्।
तत्क्षण घृत जैसा होता,
स्वाद युक्त बलयुत होता।।

हे चारित्र चमत्कारी,
वीतराग चर्या धारी।
चमत्कार यह चर्या का,
नमस्कार पथ ईर्या का।।

घृत रस त्यागी वैरागी,
रूप दिगम्बर बड़भागी।
जय सम्राट तपस्वी की,
सन्मति पूर्ण मनस्वी की।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 42 ।।

ऋद्धि मंत्र

ऋद्धि मंत्र

णमो महुर सवीणं

अर्थः मधुस्रावी ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

मधुस्रावी जिन ऋद्धि श्रमण,
नमस्कार हो चरण-शरण।
करपात्री के कर पुट में,
चमत्कार आया घटने।।

रखा हुआ भोजन खारा,
मधुर-मधुर होता सारा।
मधुर शब्द किसका वाचक,
गुड़-शक्कर का सम्बोधक।।

मधुर-मधुर रस धारी ये,
एकार्थक व्यवहारी ये।
स्वादापेक्षा दोनों सम,
कोई नहीं किसी से कम।।

वन्दन मन वच काया हो,
महामधुर गुण छाया दो।
शुद्ध भावना से प्रतिपल,
नमस्कार गुरुदेव विमल।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 43 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो अमिय सवीणं

अर्थः अमृतस्रावी ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

अमृतस्रावी ऋद्धि श्रमण,
आत्म तत्त्व में करें रमण।
ये कैसे है बतलाऊँ,
रत्नत्रय के गुण गाऊँ।।

अरे-अरे पृथ्वी तल पर,
आप अलौकिक हो ऋषिवर।
धन्य आपकी यह क्षमता,
गर्व रहित प्रतिपल समता।।

प्राप्त ऋद्धि का बल ऐसा,
भोजन हो अमृत जैसा।
अरे इसी भूमण्डल पर,
देवाहार करें ऋषिवर।।

स्वतः सहज परिणमन रहा,
श्रमण तपस्या धन्य अहा।
तप को और तपस्वी को,
वन्दन महामनस्वी को।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 44 ।।

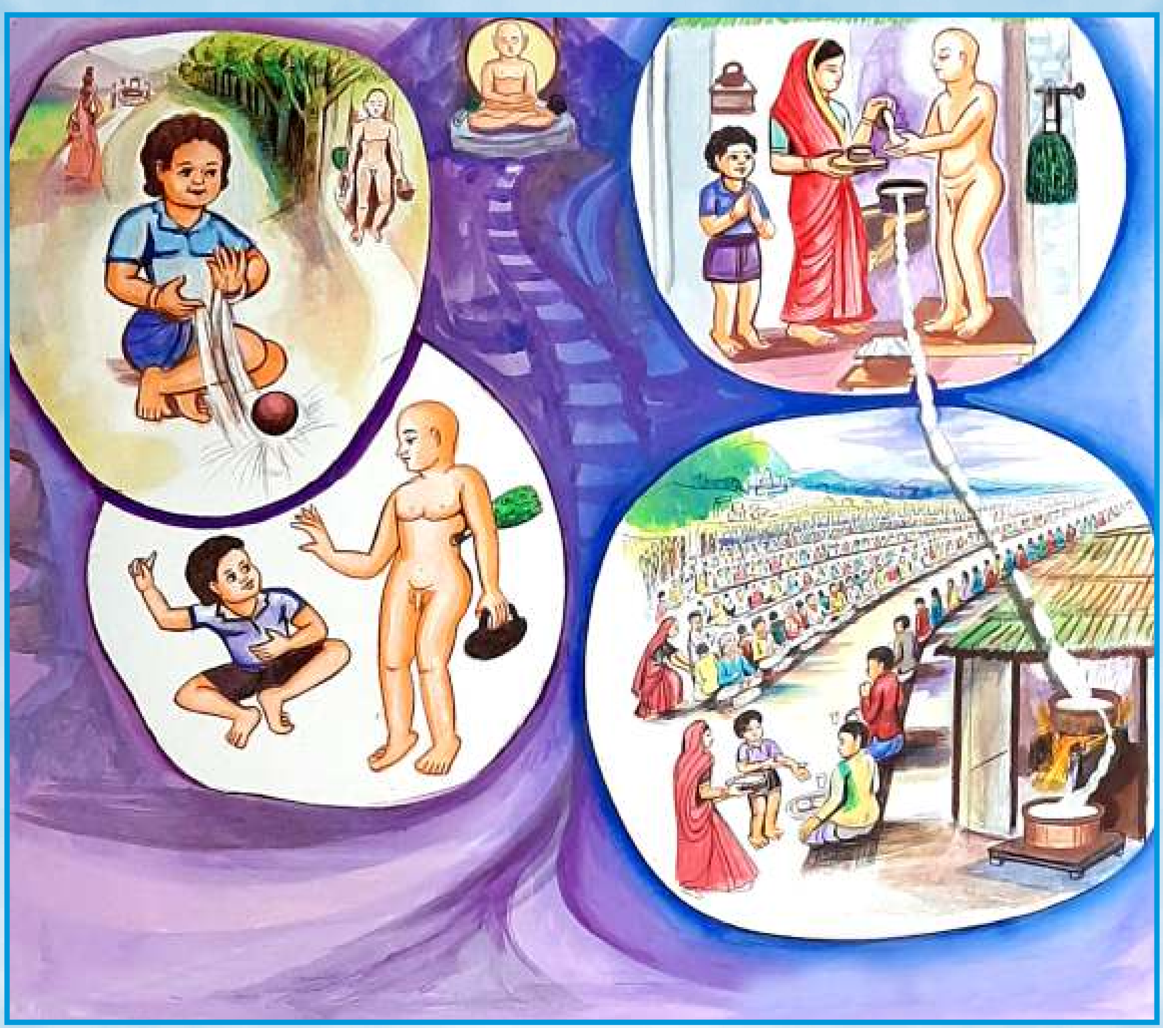

पंचाश्चर्य

णमो अक्खीण महाणसाणं

अर्थः अक्षीण महानस ऋद्धि जिनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

हे अक्षीण महानस जिन!
ऋद्धीश्वर हे नमन-नमन।
जिस चौके ये मुनि आयें,
कुटिया पावन कर जायें।।

इन मुनि को आहार दिया,
दूध भात सत्कार किया।
फिर जो कुछ आहार बचा,
तपो ऋद्धि से रचा-रचा।।

स्वजन-परिजन जन पुरजन,
सज्जन श्रावक साधक गण।
या चक्री का सैनिक दल,
एक साथ सब ही मिल-जुल।।

भोजन करने आ जायें,
भोजन करके सुख पायें।
कमी नहीं कुछ भी आती,
तपोकीर्ति जग छा जाती।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 45 ।।

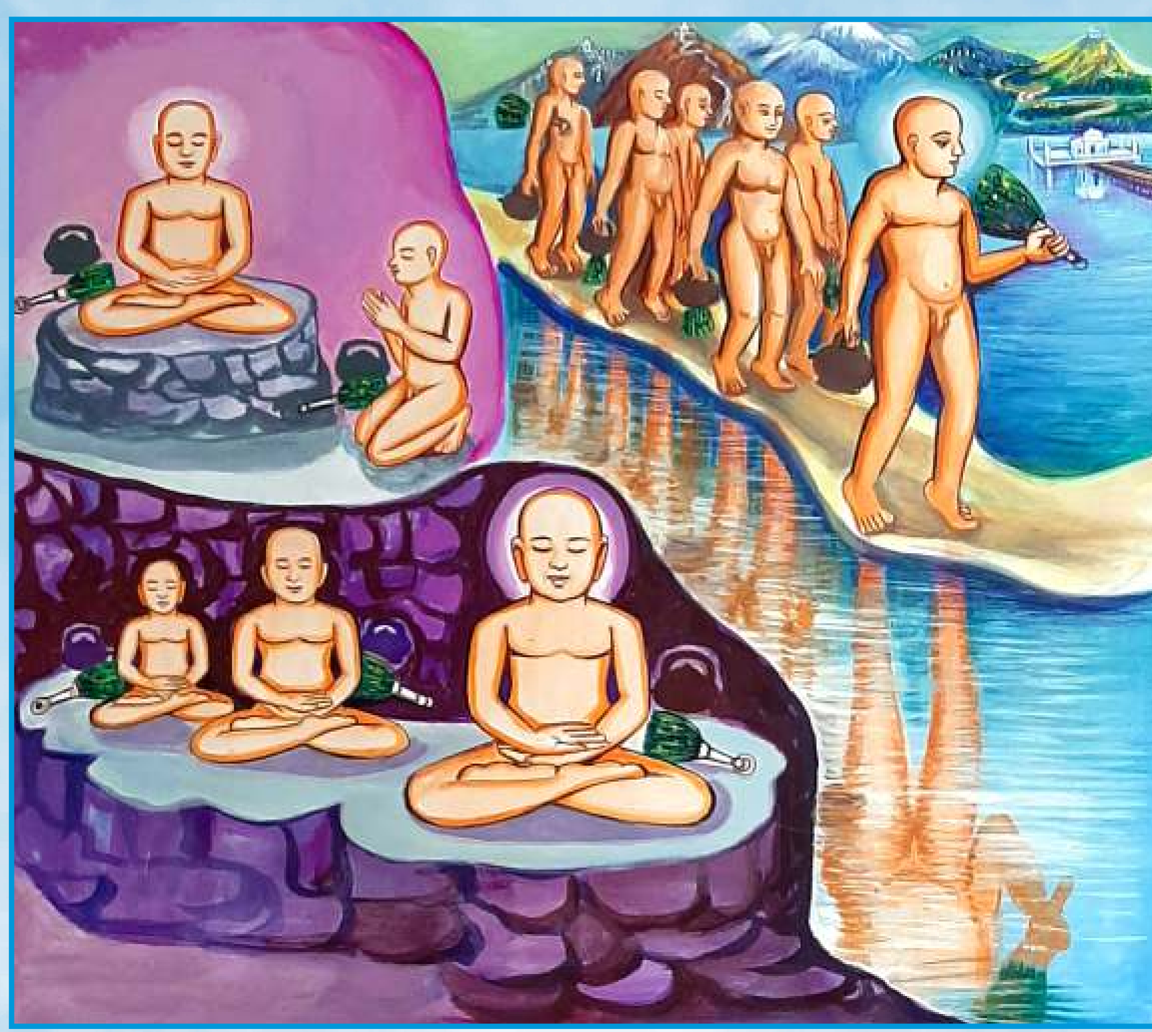

णमो वड्ढमाणाणं

अर्थः वर्द्धमान जिन को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

वर्द्धमान ऋषि जय जय जय,
वर्द्धमान यति जय जय जय।
वर्द्धमान पति जय जय जय,
वर्द्धमान मति जय जय जय।।

वर्द्धमान के शासन में,
वर्द्धमान के आसन में।
वर्द्धमान अनुशासन में,
वर्द्धमान जिन शासन में।।

वर्द्धमान गुण गण सारे,
वर्द्धमान सम हो प्यारे।
वर्द्धमान तारण हारे,
वर्द्धमान कारण धारे।।

वर्द्धमान ऋद्धीश्वर हे!
वर्द्धमान सिद्धीश्वर हे!
वर्द्धमान हे ऋद्धि श्रमण,
वर्द्धमान पद नमन नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 46 ।।

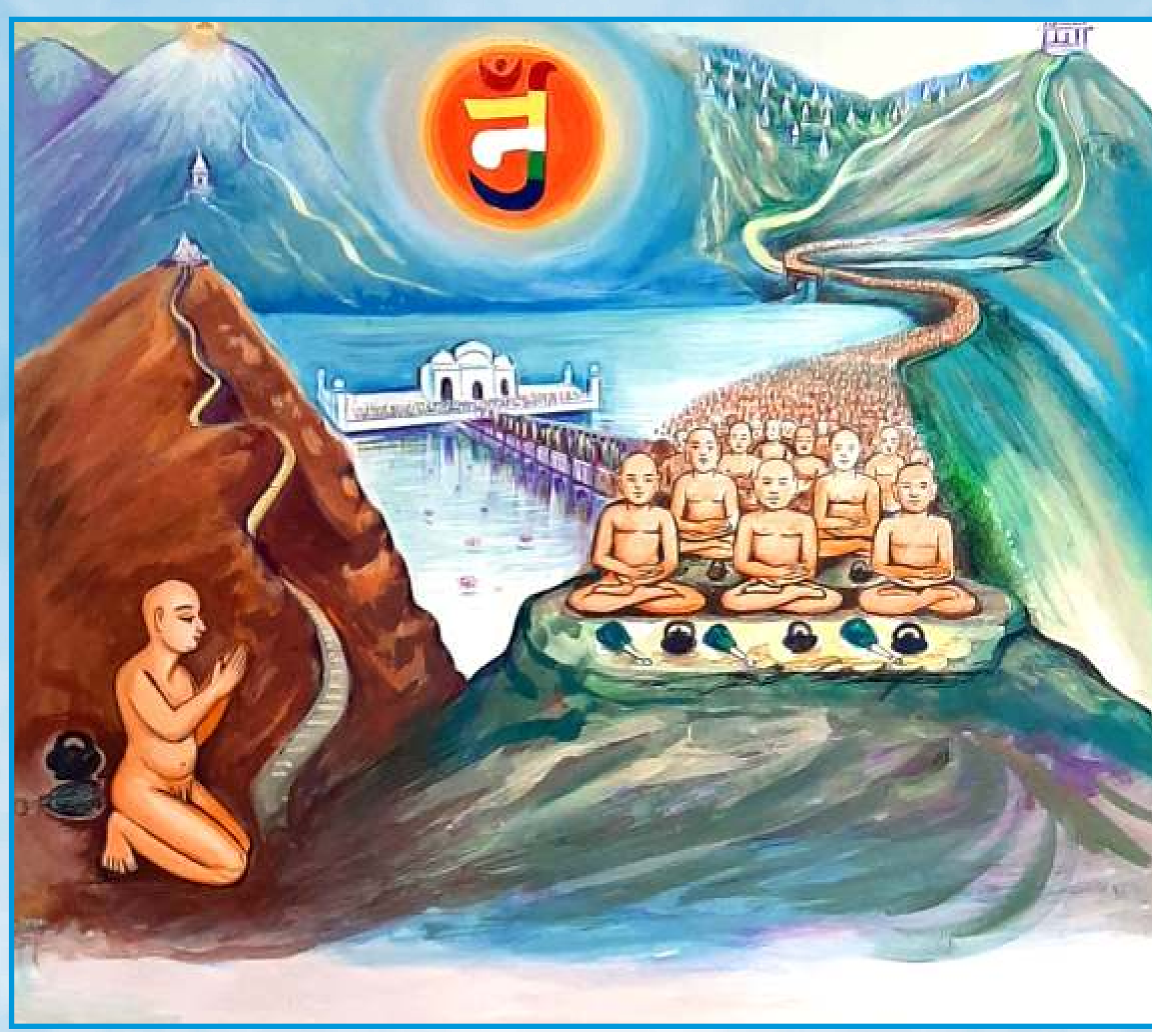

णमो सिद्धायदणाणं

अर्थः लोक के सब सिद्धायतनों को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

सर्व लोक में जितने जिन!
सबको होवे नमन-नमन।
सिद्ध आयतन कहलाते,
शीश झुका हम सुख पाते।।

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय,
जिन प्रतिमा या जिन आलय।
सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर,
चम्पापुर या पावापुर।।

अष्टापद गिरनार अचल,
तीर्थंकर के ये शिवथल।
और निषद्याथल जानों,
सिद्ध आयतन वह मानों।।

देश सिद्ध श्रमणों के थल,
जहाँ समाधि हुईं विमल।
उन सबका है यहाँ ग्रहण,
सिद्ध आयतन नमन-नमन।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 47 ।।

ऋद्धि मंत्र

णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्ध रिसीणो

अर्थः ऋषि, बुद्ध, वर्धमान, महति महावीर जिन को नमस्कार हो।

रत्नत्रय धारी ऋषियों के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
श्री गणधर मण्डल विधान की, पूजा आज रचाता हूँ।।

वर्द्धमान जिन बुद्ध श्रमण,
तीर्थंकर गणधर वन्दन।
अरे पूर्व में किया नमन,
यहाँ पुनः क्यों किया ग्रहण।।

मिले धर्म पथ जिनके पद,
पूजनीय वे पावन पद।
पाँचों अंग नवाकर के,
तीनों अंग सरल करके।।

उनकी पूर्ण विनय करना,
उनके पद मस्तक धरना।
यही बात बतलाने को,
विनय पाठ सिखलाने को।।

वर्द्धमान पद किया नमन,
करने अपना मन पावन।
विनय मोक्ष का द्वारा कहा,
नमस्कार का लक्ष्य रहा।।

हे ऋद्धीश्वर! महामुनीश्वर! ऋद्धि-सिद्धि गुण गाता हूँ।
निर्मल रत्नत्रय प्रकटाने, रत्नत्रय को ध्याता हूँ।। 48 ।।

चेतन कृतियाँ

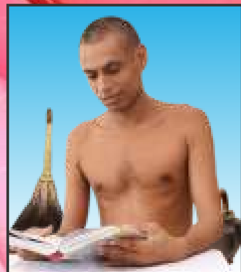
पूज्य मुनि 108
श्री विभास्वरसागर जी
गुरु विरागसागर जी

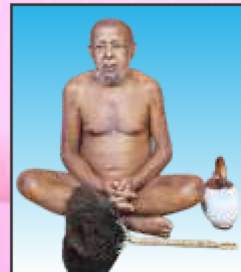
पूज्य मुनि 108
श्री प्रक्षालसागर जी

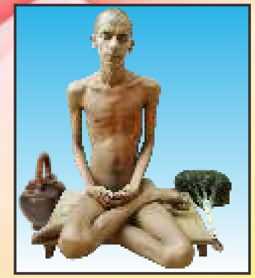
पूज्य मुनि 108
श्री आचरणसागर जी

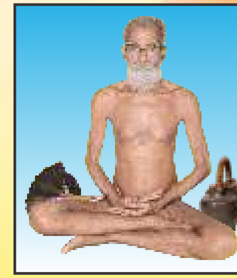
पूज्य मुनि 108
श्री अध्ययनसागर जी

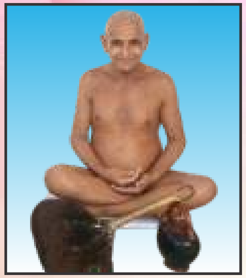
पूज्य मुनि 108
श्री आवश्यकसागर जी

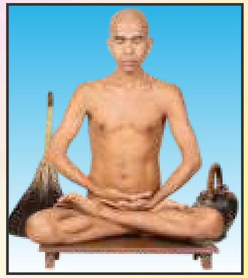
पूज्य मुनि 108
श्री आचारसागर जी

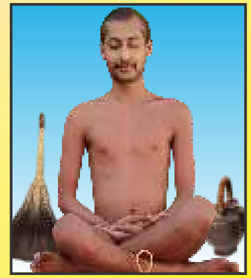
पूज्य मुनि 108
श्री शुद्धात्मसागर जी

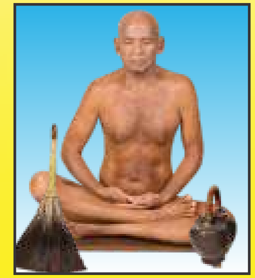
पूज्य मुनि 108
श्री सिद्धात्मसागर जी

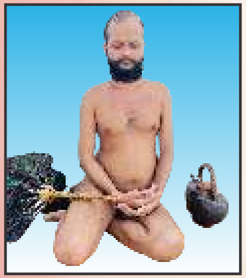
पूज्य मुनि 108
श्री शुद्धसागर जी

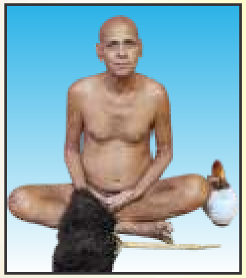
पूज्य मुनि 108
श्री परमार्थसागर जी

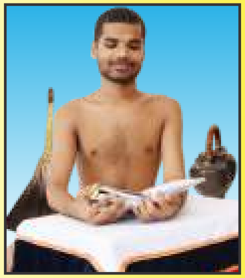
पूज्य मुनि 108
श्री शुद्धोपयोगसागर जी

पूज्य क्षुल्लक 105
श्री सिद्धसागर जी

पूज्य क्षुल्लक 105
श्री शान्तसागर जी

चेतन कृतियाँ

पूज्य आर्यिका 105
अर्हम्श्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
ओम्श्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
समितिश्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
संस्कृतश्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
संस्कृतिश्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
अर्हन्श्री माताजी

पूज्य आर्यिका 105
स्वाध्यायश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका ह्रींश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका आराधनाश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका सिद्धश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका संस्तुतिश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका अद्योम्श्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका साधनाश्री माताजी

पूज्य 105
क्षुल्लिका सामायिकश्री माताजी

समाधिस्थ चेतन कृतियाँ

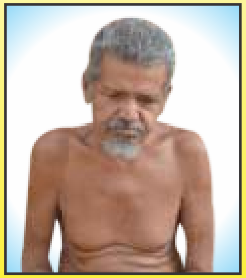

समाधिस्थ पूज्य मुनि 108
श्री अध्यापनसागर जी

समाधिस्थ पूज्य मुनि 108
श्री अध्यात्मसागर जी

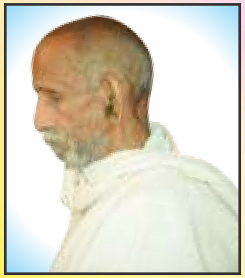

समाधिस्थ पूज्य मुनि 108
श्री अनशनसागर जी

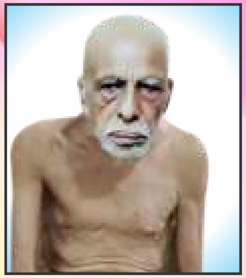

समाधिस्थ पूज्य मुनि 108
श्री समाधिसागर जी

समाधिस्थ पूज्य मुनि 108
श्री बाहुबलीसागर जी

समाधिस्थ पूज्य आर्यिका 105
विनिर्मलाश्री माताजी

समाधिस्थ पूज्य आर्यिका 105
अनुकम्पाश्री माताजी

समाधिस्थ पूज्य आर्यिका 105
प्राज्ञाश्री माताजी

समाधिस्थ पूज्य 105
क्षुल्लिका विदेहश्री माताजी

समाधिस्थ पूज्य 105
क्षुल्लिका अर्हद्श्री माताजी

आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के संघस्थ-साधुगण

क्र.स.	साधु / साध्वी	दीक्षा गुरु	तिथि एवं स्थान
1.	श्रमण विभास्वरसागर जी महाराज	आचार्य श्री विरागसागर जी	08.03.2009, गिरनार जी (राज.)
2	श्रमण प्रक्षालसागर जी महाराज	आचार्य श्री विमदसागर जी	वर्ष 2010, शाहगढ़ (म.प्र.)
3.	श्रमण आचरणसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	10.02.2011, हटा (म.प्र.)
4.	श्रमण अध्ययनसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	04.12.2014, सागर (म.प्र.)
5.	श्रमण आवश्यकसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	04.12.2014, सागर (म.प्र.)
6.	श्रमण आचारसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	04.12.2014, सागर (म.प्र.)
7.	श्रमण शुद्धात्मसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
8.	श्रमण सिद्धसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
9.	श्रमण शुद्धसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	11.10.2019, निवाई (राज.)
10.	श्रमण परमार्थसागर जी महाराज	आचार्य श्री विमदसागर जी	वर्ष 2019, पारसोला (राज.)
11.	श्रमण शुद्धोपयोगसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	14.02.2021, परतापुर (राज.)
12.	श्रमणी अर्हंश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	14.04.2016, सम्मेदशिखर (झार.)
13.	श्रमणी ओमश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	14.04.2016, सम्मेदशिखर (झार.)
14.	श्रमणी समितिश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
15.	श्रमणी संस्कृतश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
16.	श्रमणी संस्कृति श्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
17.	श्रमणी अर्हन्श्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	24.12.2020, घाटोल (राज.)
18.	श्रमणी स्वाध्यायश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	14.12.2021, बांसवाड़ा (राज.)
19.	क्षुल्लिका ह्रीं श्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	18.11.2015, भिलाई (छ.ग.)
20.	क्षुल्लिका आराधना श्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	17.01.2016, राजिम (छ.ग.)

आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के संघस्थ-साधुगण

क्र.स.	साधु/साध्वी	दीक्षा गुरु	तिथि एवं स्थान
21.	क्षुल्लिका सिद्धश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.11.2016, जैतहरि (म.प्र.)
22.	क्षुल्लिका संस्तुतिश्री माता जी	आचार्य श्री विभवसागर जी	16.02.2018, श्रवणबेलगोला (कर्ना.)
23.	क्षुल्लक सिद्धसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	21.02.2020, उदयपुर (राज.)
24.	क्षुल्लिका अद्योमश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	21.02.2020, उदयपुर (राज.)
25.	क्षुल्लिका साधनाश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	26.04.2020, परतापुर (राज.)
26.	क्षुल्लक शांतसागर जी महाराज	आचार्य श्री विभवसागर जी	30.11.2021, बसंवाड़ा (राज.)
27.	क्षुल्लिका सामायिकश्री माताजी	आचार्य श्री विभवसागर जी	14.12.2021, बसंवाड़ा (राज.)

समाधिस्थ साधुगण

क्र.स.	साधु/साध्वी	दीक्षा गुरु	तिथि एवं स्थान
1.	श्रमण अध्यापनसागर जी	04.12.2014, सागर (म.प्र.)	08.2021, शिरड़शहापुर (महा.)
2.	श्रमण अध्यात्मसागर जी	08.08.2015, दुर्ग (छ.ग.)	13.08.2015, दुर्ग (छ.ग.)
3.	श्रमण अनशनसागर जी	06.10.2017, शिरड़शहापुर (महा.)	08.10.2017, शिरड़शहापुर (महा.)
4.	श्रमण समाधिसागर जी	07.07.2018, मुम्बई (महा.)	22.07.2018 मुम्बई, (महा.)
5.	श्रमण बाहुबलिसागर जी	25.01.2021, बांसवाड़ा (राज.)	25.01.2021, बांसवाड़ा (राज.)
6.	श्रमणी विनिर्मलाश्री माताजी	29.12.2007, नागपुर (महा.)	29.12.2007, नागपुर (महा.)
7.	श्रमणी अनुकम्पाश्री माताजी	2011, सागर (म.प्र.)	2011, सागर (म.प्र.)
8.	श्रमणी प्राज्ञाश्री माताजी	10.01.2018, बगरोही (म.प्र.)	12.01.2018, बगरोही (म.प्र.)
9.	क्षुल्लिका विदेहीश्री माताजी	14.10.2001, कोतमा (म.प्र.)	16.10.2001, कोतमा (म.प्र.)
10.	क्षुल्लिका अर्हद्श्री माताजी	सितम्बर, 2014, सागर (म.प्र.)	सितम्बर, 2014, सागर (म.प्र.)

ओमश्री माताजी को दीक्षा देते हुए आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज

दिनांक :

14 अक्टूबर, 2013

स्थान :

अशोक नगर

(म.प्र.)

Back Aster-2

मंत्रपुत्री आर्यिका ओम्श्री माताजी

पूर्व नाम	:	बा. ब्र. अंजू दीदी
माता श्री	:	श्रीमती चन्द्रवती जैन
पिता श्री	:	श्रीमान् दीपचन्द्र जैन
जन्म स्थान	:	टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	12 दिसम्बर 1993
लौकिक शिक्षा	:	11वीं
धर्मिक शिक्षा	:	समयसार, अध्यात्म, न्याय, आगम, हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत
ब्रह्मचर्य व्रत	:	सितम्बर 2010 टीकमगढ़
संघ प्रवेश	:	अक्षय तृतीया 2011 मोराजी, सागर (म.प्र.)
दो प्रतिमा	:	अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी 1 नवम्बर, 2011
तृतीय प्रतिमा	:	अक्षय तृतीया अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी, (राज.)
क्षु.दीक्षा	:	14 अक्टूबर 2013, अशोकनगर (म.प्र.)
आर्यिका दीक्षा	:	14 अप्रैल 2016, सम्मेदशिखर (झार.)
दीक्षा गुरु	:	आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज,
रुचि	:	प्रवचन, अध्ययन आदि
साहित्य सृजन	:	वचन सिद्धि, इष्टोपदेश (सचित्र), विराग देशना, इष्टोपदेश वाचना, ऋद्धि मंत्र (सचित्र)।

Blank Rahega

णमो जिणाणं

गौतम गणधर विरचित

ऋद्धिमंत्र

(सचित्र)

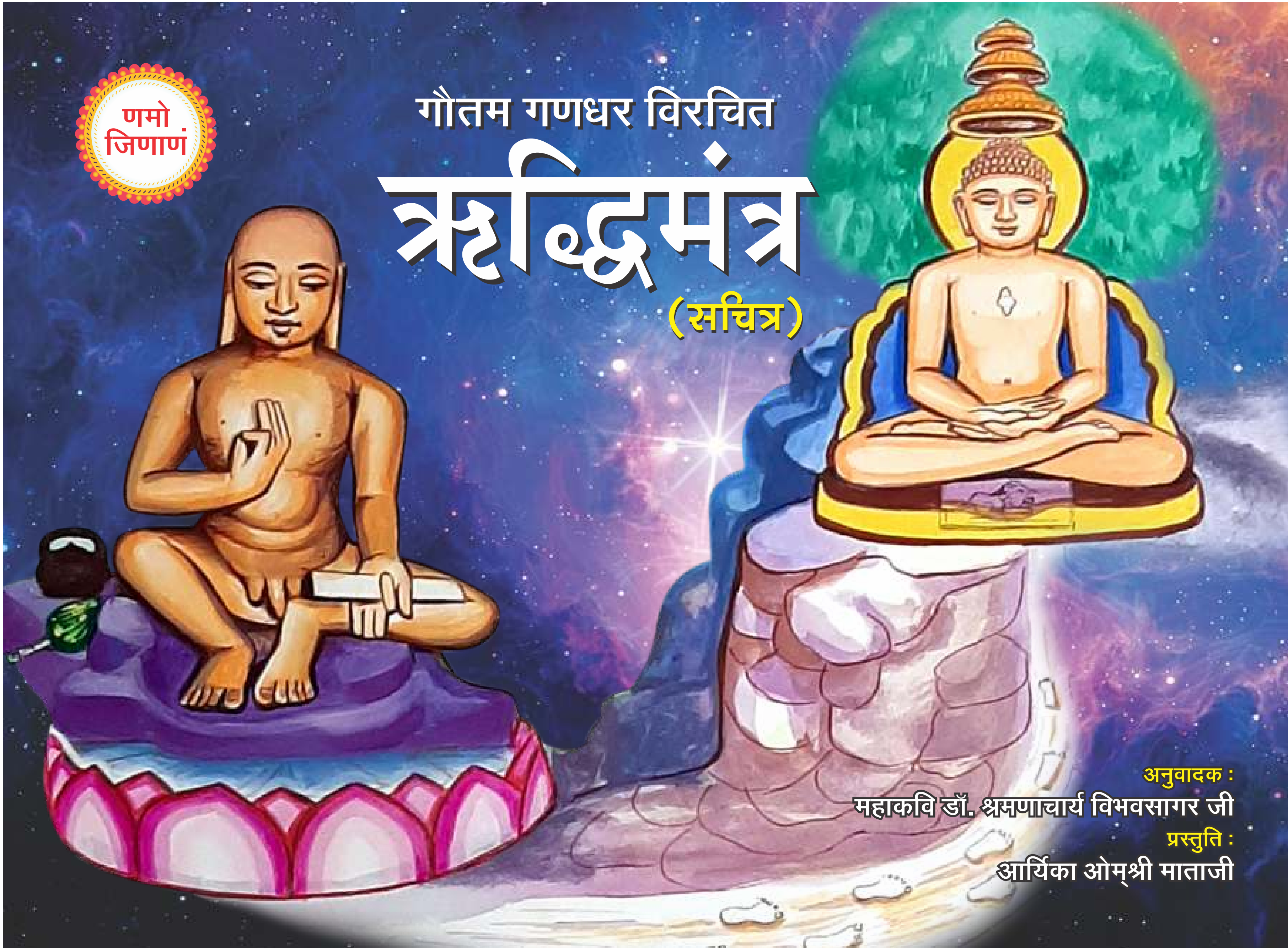

अनुवादक :

महाकवि डॉ. श्रमणाचार्य विभवसागर जी

प्रस्तुति :

आर्यिका ओम्श्री माताजी

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

पूर्व नाम	-	पं. अशोक कुमार जी जैन ''शास्त्री''
जन्म स्थान	-	किशनपुरा (सागर)
जन्मतिथि	-	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033, तद्नुकूल 23 अक्टूबर, 1976
पिताश्री	-	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जी जैन (क्षुल्लक सिद्धसागर जी)
माताश्री	-	श्राविका-रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन (समाधिस्थ आर्यिका प्राज्ञाश्री माताजी)
शिक्षा	-	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष
धार्मिक शिक्षा	-	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	-	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.)
वैराग्य	-	9 अक्टूबर, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया
क्षुल्लक दीक्षा	-	28 जनवरी, 1995 मंगलगिरी, सागर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	-	23 फरवरी, 1996, देवेन्द्र नगर जिला-पन्ना (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	-	14 दिसम्बर, 1998, अतिशय क्षेत्र वरासौ, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	-	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	-	31 मार्च, 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	-	जैन आगमरूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन-जन के लिए हृदयग्राह्य है।
रुचि	-	पठन-पाठन, काव्य, सृजन, चिंतन, मनन
कृतियाँ	-	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 85 कृतियों की सर्जना की गई है
अलंकरण	-	''सारस्वत-श्रमण'', ''सारस्वत कवि'', ''शास्त्र कवि'' ''नय चक्रवर्ती'', ''संस्कृताचार्य'', विद्यावाचस्पति (डॉक्टर)'', चर्यानिधि, श्रुत प्रभाकर, महाकवि, काव्य केशरी, सम्यक्त्व चूड़ामणि

प्रिन्ट 'ओ' लेण्ड, 9829205270